नीतिवचन

1 दाऊद के बेटे इस्राएल के राजा सुलैमान
के नीतिवचन। 2 इनको पढ़ने से व्यक्ति
बुद्धि[a]और शिक्षा[b] हासिल करे और समझ
की बातों को समझे 3 और काम करने में
अनुशासन[c], इन्साफ़ और सिधाई की शिक्षा
पाए। 4 भोलों को चतुराई और नवजवान को
ज्ञान और विवेक मिले। 5 अक्लमन्द सुन
कर अपनी विद्या[d] बढ़ाए और समझदार
बुद्धि का उपदेश पाए। 6 जिस से वे लोग
नीतिवचन, दृष्टांत, बुद्धिमानों के वचन और
उनके रहस्यों को समझें। 7 प्रभु का डर रखना
बुद्धि की शुरूवात है, बुद्धि और शिक्षा[e] से
बेवकूफ़ लोग ही नफ़रत करते हैं। 8 हे मेरे
बेटे, अपने पिता से मिलने वाली सीख पर
कान लगाओ और अपनी माँ की शिक्षा को
मत छोड़ना। 9 क्योंकि वे मानो तुम्हारे सिर
के लिए खूबसूरत ताज और तुम्हारे गले की
माला होंगे। 10 हे मेरे बेटे, "अगर बुरा करने
वाले लोग तुम्हें फुसलाएँ तो उनकी बात न
मानना ।" 11 अगर वे कहें, "हमारे संग चलो
कि हम हत्या[f] करने का इंतजार करें, हम
बेगुनाह लोगों की बिना कारण ताक में रहें।
12 हम अधोलोक की तरह उन्हें जिंदा, कब्र में
पड़े हुओं की तरह समूचा निगल लेंगे। 13 हम
को हर तरह की कीमती चीजें मिलेंगी और
हम अपने घर को लूट से भर लेंगे 14 तुम हमारे
साथ हो लो हम सभी का एक ही बटुआ हो"
15 तो हे मेरे बेटे, तुम उनके संग रास्ते में न
चलना, यहाँ तक कि उनकी डगर में पाँव
भी मत रखना। 16 क्योंकि वे बुराई ही करने
को दौड़ते हैं और खून करने को फुर्ती करते
हैं। 17 क्योंकि चिड़िया के देखते हुए जाल
फैलाना बेकार होता है; 18 और ये लोग तो
अपनी ही बर्बादी करने के लिए और अपनी
ही प्राण[g] को जोख़िम में डालने पर उतारू हैं।
19 सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है,
उनकी जान लालच ही की वजह से बर्बाद
हो जाती है। 20 बुद्धि सड़क पर ऊँची आवाज़
से कहती है और चौराहों में उपदेश देती है।
21 वह बाज़ारों की भीड़ में पुकारती है, वह
शहर के फ़ाटकों के पास और नगर के अन्दर
भी ये बातें कहती है। 22 हे भोले लोग, तुम
कब तक भोलेपन को चाहोगे? हे ठट्ठा करने
वालो, तुम कब तक ठट्ठा करने से प्रसन्न
रहोगे? हे मूर्खों कब तक ज्ञान से दुश्मनी
रखोगे। 23 मेरी डाँट सुन कर तुम अपना
मन बदलो। सुनो, मैं अपने आत्मा[h] तुम्हारे
लिए उण्डेल दूँगी। मैं तुम को अपने वचन[i]
बताऊँगी। 24 मैंने तो पुकारा, लेकिन तुमने
इनकार किया, मैंने हाथ फैलाया, लेकिन
किसी ने गौर न किया 25 वरन् तुमने मेरी
सलाह को, अनसुनी किया और मेरी ताड़ना[j]
की कीमत न जानी 26 इसलिए मैं भी तुम्हारी
विपत्ति[k] के वक्त हसूँगी और जब तुम डर
में डूब जाओगे, 27 वरन् आँधी की तरह तुम
पर डर आ पड़ेगा और मुसीबत बवण्डर
की तरह आ पड़ेगी और तुम संकट[l] और
तंगी में फँसोगे, तब मैं हँसी उड़ाऊँगी। 28 उस
समय वे मुझे पुकारेंगे और मैं न सुनूँगी, वे
मुझे मेहनत से तो ढूँढेंगे, लेकिन पा नहीं
सकेंगे। 29 क्योंकि उन्होंने ज्ञान से दुश्मनी
की और प्रभु का डर उन्हें पसंद न आया।

---

[a] 1.2 जीने की कला [b] 1.2 नैतिक सलाह [c] 1.3 खराई [d] 1.5 अक्ल [e] 1.7 सिखाए जाने [f] 1.11 खून
[g] 1.18 जान [h] 1.23 विचार [i] 1.23 बातें [j] 1.25 डाँट [k] 1.26 मुसीबत [l] 1.27 परेशानी

30 उन्होंने मेरी सलाह न चाही, वरन् मेरी सब
डाँट-फटकार को ठुकरा दिया। 31 इसलिए
वे अपनी करनी का फल भोगेंगे और अपनी
युक्तियों के फल से ऊब जाएँगे 32 क्योंकि
भोले लोगों का भटक जाना, उनकी बर्बादी
का कारण होगा और निश्चिन्त रहने या[a] की
वजह से बेवकूफ़ लोग नाश होंगे, 33 लेकिन
जो मेरी सुनेगा वह निडर[b] बसा रहेगा और
बेखटके सुख से रहेगा।

2 हे मेरे बेटे, अगर तुम मेरी सुनो और
मेरी आज्ञाओं को अपने अन्दर इकट्ठा
रखो 2 और बुद्धि की बात ध्यान से सुनो और
समझ की बात मन लगा कर सोचो 3 और
कुशलता तथा समझ के लिए बड़ी कोशिश
से पुकारो, 4 और उसको चाँदी की तरह ढूँढो
और छुपी दौलत की तरह उसकी खोज में
लगे रहो 5 तो तुम प्रभु के डर को समझोगे
और प्रभु का ज्ञान तुम्हें मिलेगा, 6 क्योंकि
बुद्धि प्रभु देते हैं, ज्ञान और समझ की बातें
उन्हीं के मुँह से निकलती हैं। 7 वह सीधे
लोगों के लिए खरी बुद्धि रख छोड़ते हैं,
जो खराई से जीते हैं, उनके लिए वह ढाल
ठहरते हैं। 8 वह न्याय[c] के रास्तों की देख
भाल करते और अपने भक्तों के रास्ते की
रक्षा करते हैं। 9 तब तुम सही उचित और
नतरफ़दारी अर्थात सब भली भली चाल[d]
को समझ सकोगे। 10 क्योंकि बुद्धि तो तुम्हारे
दिल[e] में दाखिल होगी और ज्ञान तुम्हें सुख
देने वाला लगेगा 11,12 ताकि तुम्हें बुराई के
रास्ते से और उलट-फेर की बातों के कहने
वाले से बचाए। 13 जो खराई के रास्ते छोड़
देते हैं, ताकि अन्धेरे रास्ते में चलें। 14 जो
बुराई करने से खुश होते हैं और दुष्ट जन की
उलट-फेर की बातों में मगन रहते हैं। 15 जिन
की चालचलन टेढ़ी-मेंढ़ी और जिन के रास्ते
बिगड़े हुए हैं। 16 तब तुम पराई महिला से
भी बचोगे, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती
है। 17 और अपनी जवानी के साथी को छोड़
देती और अपने प्रभु की वाचा को भूल जाती
है। 18 उस का घर मौत की ढलान पर है और
उसकी डगरें मरे हुओं के बीच पहुँचाती हैं।
19 जो उसके पास जाते हैं, उनमें से कोई भी
लौटकर नहीं आता और न वे ज़िन्दगी का
रास्ता पाते हैं। 20 तुम भले लोगों के रास्ते में
चलो और ईमानदार लोगों के मार्ग को पकड़े
रहो 21 क्योंकि सही लोग देश में रहेंगे और
खरे लोग इसमें बसे रहेंगे। 22 दुष्ट लोग देश
में से बर्बाद होंगे और धोखा देने वाले उसमें
से उखाड़े जाएँगे।

3 हे मेरे बेटे, मेरी शिक्षा को न भूलना,
अपने मन में मेरी आज्ञाओं को रखे
रहना 2 क्योंकि ऐसा करने से तुम्हारी उम्र
बढ़ेगी और तुम ज़्यादा कुशल[f] से रहोगे
3 कृपा और सच्चाई तुम से अलग न होने पाएँ,
उनको अपने गले का हार बनाना और अपने
मन की पटिया पर लिखना 4 और तुम प्रभु
तथा इन्सान दोनों का सहयोग पाओगे और
अति बुद्धिमान होगे 5 तुम अपनी समझ का
सहारा मत लेना, लेकिन सारे मन से प्रभु पर
भरोसा रखना 6 प्रभु परमेश्वर को ही याद
करके सब काम करना. तब वह तुम्हारे लिए
सीधा रास्ता निकालेंगे। 7 अपनी निगाह में
अक्लमन्द न होना, प्रभु की इज़्ज़त करना
और बुराई से अलग रहना 8 ऐसा करने से
तुम्हारी सेहत अच्छी रहेगी और हड्डियाँ भी
मज़बूत होंगी। 9 अपनी दौलत से, और अपनी
ज़मीन की पैदावार को दे देकर प्रभु परमेश्वर
को प्रतिष्ठा[g] देना 10 इस तरह तुम्हारे खत्ते

[a] 1.32 लापरवाही [b] 1.33 बेफिक्र [c] 2.8 इन्साफ़ [d] 2.9 भले रास्ते [e] 2.10 मन [f] 3.2 सुख [g] 3.9 आदर

भरे-पूरे रहने के साथ तुम्हारे रसकुण्डों से
नया दाखरस उमण्डता रहेगा 11 हे मेरे बेटे,
प्रभु परमेश्वर की शिक्षा से मुँह न मोड़ना
और जब वह तुम्हें डाँटें, तब बुरा न मानना
12 क्योंकि प्रभु परमेश्वर जिस से प्यार करते
हैं, उसको डाँटते भी हैं, जैसे कि पिता उस
बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है। 13 क्या
ही आशीषित है वह इन्सान जो बुद्धिमानी
और समझ हासिल करे। 14 क्योंकि बुद्धि को
पाना चाँदी पाने से बढ़ कर है और शुद्ध सोने
के फ़ायदे से ज़्यादा है। 15 वह मूंगे से ज़्यादा
कीमती है, और जितनी चीजों की तुम चाहत
रखते हो, उनमें से कोई भी उसके समान
न ठहरेगी। 16 उनके दाहिने हाथ में लम्बी
उम्र और बाएँ हाथ में दौलत और महिमा[a]
है। 17 उनके रास्ते मन को पसंद आने वाले
हैं उनके सभी रास्ते कुशलता के हैं। 18 जो
लोग बुद्धि को अपना लेते हैं, उनके लिए
वह ज़िन्दगी का पेड़ बनती है और जितने
उसे मज़बूती से पकड़े रहते है, वे धन्य[b]
हैं। 19 प्रभु ने बुद्धि ही से पृथ्वी की नींव
डाली और उन्होंने समझ ही के द्वारा स्वर्ग
को स्थिर किया। 20 उन्हीं के ज्ञान से गहरे
पानी के सोते फूट निकले और आकाश से
ओस टपकती है 21 हे मेरे बेटे, ये बातें तुम्हारी
निगाह से ओझल न होने पाएँ, खरी बुद्धि
और विवेक को संभालना 22 तब इन से तुम्हें
जीवन मिलेगा और ये तुम्हारे गले की माला
बनेंगे। 23 तुम अपने रास्ते पर निडर चलोगे
और तुम्हारे पाँव में ठेस न लगेगी। 24 जब
तुम लेटोगे, डर न लगेगा और चैन की नींद
आएगी। 25 अचानक आने वाले डर से न
घबराना और जब दुष्टों पर संकट आ पड़े,तो
मत घबराना। 26 क्योंकि प्रभु परमेश्वर तुम्हें
सहारा दिया करेंगे और तुम्हारे पाँव को फन्दे
में फँसने न देंगे। 27 अगर तुम में ताकत
हो तो जिस किसी का भला करना चाहिए,
वैसा करने से पीछे न रहना। 28 यदि तुम्हारे
पास देने को कुछ हो तो अपने पड़ोसी से
यह न कहना, “कल आना तब मैं तुम्हें
दूँगा।” 29 जब तुम्हारा पड़ोसी तुम पर भरोसा
रख कर तुम्हारे पास बेखटके रहता हो,
तो उसके खिलाफ़ बुरी योजना मत बनाना।
30 जिस इन्सान ने तुम्हारा कोई नुकसान न
किया हो, उस से बिना वजह झगड़ा न
लेना 31 उपद्रवी इन्सान से ईर्ष्या न करना,
न उसके चालचलन को अपनाना 32 क्योंकि
प्रभु परमेश्वर दुष्ट इन्सान से नफ़रत करते
हैं, लेकिन सीधे लोगों को वह कठिन बातें
बताते हैं। 33 दुष्ट के घर पर प्रभु की सज़ा,
लेकिन खरे लोगों के घर पर उनकी आशीष
बनी रहती है। 34 ठट्ठा करने वालों को वह
गिनते भी नहीं हैं और दीन-दुखियों पर कृपा
करते हैं। 35 बुद्धिमान लोग इज्ज़त पाएँगे,
लेकिन मूर्खों की बेइज्ज़ती होती ही रहेगी।

4 हे मेरे बच्चो, पिताजी की शिक्षा सुनो और
समझ पाने में मन लगाओ 2 क्योंकि मैंने
तुम्हें उत्तम शिक्षा दी है, मेरी शिक्षा को न
छोड़ो। 3 देखो, मैं भी अपने पिता का बेटा था
और माता का अकेला दुलारा । 4 मेरे पिताजी
मुझे यह सिखाया करते थे, कि मैं उनके कहने
के अनुसार करुँ और मैं उनकी आज्ञाओं को
मानूँ ताकि जीवित रहूँ। 5 बुद्धि और समझ को
हासिल करो, उनको भूलो भी मत और छोड़ो
भी नहीं। 6 बुद्धि को छोड़ना नहीं, वह तुम्हारी
रक्षा करेगी, उस से प्रेम रखना, वह तुम्हारा
पहरा देगी 7 बुद्धि सब से बड़ी है इसलिए
उसे पाने के लिए कोशिश करो। जो कुछ तुम
पा सकते हो, उसे पा लो, लेकिन समझ को

[a] **3.16** शान [b] **3.18** सुखी

पाने की कोशिश कम न होने पाए। 8 उसकी
बड़ाई करो, वह तुम को बढ़ाएगी। जब तुम
उस से लिपट जाओ, तब वह तुम्हारा नाम
ऊँचा करेगी। 9 वह तुम्हारे सिर पर खूबसूरत
गहने बाँधेगी और सुन्दर ताज रखेगी। 10 हे
मेरे बेटे, मेरी बातें सुन कर उन्हें अपना लो,
तब तुम बहुत सालों तक ज़िन्दा रहोगे 11 मैंने
तुम्हें बुद्धि का रास्ता बताया है और सिधाई
के रास्ते पर चलाया है 12 तुम्हें चलने में
रोक-टोक न होगी, चाहे तुम दौड़ो, फिर भी
ठोकर न खाओगे। 13 शिक्षा को न छोड़ो उसे
पकड़े रहो, उसकी रक्षा करो, क्योंकि वही
तुम्हारा जीवन है। 14 दुष्टों के रास्ते पर पैर न
रखना और न बुरे लोगों के रास्ते पर चलना।
15 उसे छोड़ दो, उस पर न चलो, उस से बढ़
कर आगे निकल जाओ। 16 बुराई किए बिना
वे सो नहीं सकते और जब तक वे किसी को
ठोकर न खिलाएँ, तब तक उन्हें नींद नहीं
आती है। 17 क्योंकि वे दुष्टता से कमाई हुयी
रोटी खाते हैं और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।
18 लेकिन प्रभु से प्रेम रखने वालों का रास्ता
सुबह की रोशनी की तरह होता है जो दोपहर
तक ज़्यादा होता जाता है। 19 दुष्टों का मार्ग
रास्ता घुप्प अन्धेरे की तरह है, उन्हें मालूम
ही नहीं, किस से ठोकर खा जाएँगे। 20 हे
मेरे बच्चे, ध्यान से मेरी बातों को सुनो और
अपना कान मेरी बातों पर लगाओ। 21 इनको
अपनी निगाह से ओझल न होने दो, अपने मन
में उन्हें बनाए रखो। 22 जो लोग ऐसा करते
हैं, उनके लिए वे जीवन हैं और पूरी देह के
लिए सेहत भी हैं। 23 सब से ज़्यादा अपने मन
की देख-भाल करो, क्योंकि जीवन की खास
शुरूवात वहीं से है। 24 तुम्हारा मुँह टेढ़ी बात
न कहे और ओठ गंदी बातें न कहें। 25 तुम्हारी
आँखें सामने की तरफ़ लगी रहें और पलकें
आगे की तरफ़ खुली। 26 अपने पाँव धरने के
लिए ज़मीन को समतल बनाओ, तब तुम्हारे
सारे रास्ते स्थिर रहेंगे। 27 न दायीं तरफ़ और
न बायीं तरफ़ मुड़ना, अपने पाँव को बुराई
के रास्ते पर चलने से हटा लो।

5 हे मेरे बच्चे, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान
दो, मेरी समझ की तरफ़ कान लगाओ।
2 जिस से तुम्हारा विवेक सुरक्षित रहे और
तुम ज्ञान की बातों को थामें रहो। 3 क्योंकि
पराई महिला के ओठों से शहद टपकता
है, उसकी बातें तेल से भी ज़्यादा चिकनी
होती हैं। 4 लेकिन उस का स्वाद चिरायता
सा कड़वा और दोधारी तलवार जैसा पैना
होता है। 5 उसके पैर मौत की तरफ़ ले जाते
हैं और उसके कदम नरक तक पहुँचते हैं।
6 वह जीवन के रास्ते पर ध्यान नहीं देती।
उसके चालचलन में चंचलता है, लेकिन वह
यह नहीं जानती। 7 इसलिए अब हे मेरे बेटो
मेरी सुनो और मेरी बातों से मुँह न मोड़ो।
8 ऐसी महिला से दूर ही रहो और उसके घर
के दरवाज़े के पास तक मत जाना, 9 ऐसा न
हो कि तुम अपना यश[a] दूसरों के हाथ और
अपना जीवन निर्दयी जन के वश में कर दो,
10 या पराए तुम्हारी कमाई से अपना पेट भरें
और परदेशी लोग तुम्हारी मेहनत का फल
अपने घर में रखें। 11 और तुम अपने आखिरी
समय में जब कि तुम्हारी देह कमज़ोर हो
जाए, तब यह कह कर हाथ मारने लगो,
12 "मैंने सिखाए जाने से कैसी दुश्मनी की
और डाँटने वाले को तुच्छ जाना 13 मैंने अपने
सिखाने वालों की बातें नहीं मानीं और अपने
सिखाने वालों की तरफ़ ध्यान न दिया। 14 मैं
सभा और मण्डली में लोगों के बीच भयंकर
परेशानी में फँस गया था।" 15 तुम अपने ही

[a] **5.9** इज्ज़त

तालाब से पानी और अपने ही कुएँ के सोते
का पानी पिया करना। 16 क्या तुम्हारे सोतों
का पानी सड़क में और चौकों में बहे? 17 यह
सिर्फ तुम्हारे ही लिए रहे और किसी के लिए
नहीं। 18 तुम्हारा सोता धन्य रहे और अपनी
जवानी की पत्नी के साथ खुश रहो 19 एक
प्रेमी हिरनी और खूबसूरत सांभरनी की तरह
उस का सीना तुम्हें हमेशा तृप्त रखें। उसी का
प्यार तुम्हें हर दिन खींचता रहे। 20 हे मेरे बेटे,
तुम क्यों अनजान महिला पर मोहित हो?
और क्यों किसी पराई महिला को सीने से
लगाओ? 21 इन्सान की जीवन शैली तो प्रभु
की नज़र में है और वह उसके चालचलन
पर निगाह रखते हैं। 22 दुष्ट को उसके अपने
बुरे काम ही फँसाएंगे और वह अपने ही
अपराध के फंदों से जकड़ा जाएगा। 23 न
सीखने की वजह से वह मर जाएगा और
अपनी ही बेवकूफ़ी की बढ़ती की वजह से
वह भटक जाएगा।

6 हे मेरे बेटे, अगर तुमने अपने पड़ोसी के
लिए जमानत दी हो, या किसी परदेशी
के लिए वचन दिया हो 2 तो तुम अपने ही मुँह
की बातों के जाल में फँस गए हो और अपने
ही मुँह की बातों से पकड़े गए हो। 3 हे मेरे
बेटे, तुम ऐसा करो कि अपने आपको बचा
लो, क्योंकि तुम अपने पड़ोसी के हाथ में पड़
गए हो, जाओ नम्र होकर अपने पड़ोसी को
मना लो 4 न तो अपनी आँखों में नींद और
न अपनी पलकों में झपकी आने दो 5 अपने
आपको हिरनी की तरह शिकारी के हाथ से
तथा चिड़िया की तरह चिड़ीमार के हाथ से
बचा लो। 6 हे आलसी, चींटी के पास जाओ,
उसके कामों को ध्यान से देख कर बुद्धिमान
बन जाओ। 7 चींटी का न तो कोई जज, न
अधिकारी और न कोई शासक होता है।
8 फिर भी वह गर्मी के मौसम में अपना आहार
इकट्ठा करती है और कटनी के समय खाने
की चीजें इकट्ठा करती है। 9 हे आलसी, तुम
कब तक लेटे रहोगे? तुम अपनी नींद से कब
जागोगे? 10 और थोड़ी-सी नींद, एक और
झपकी, हाथ पर हाथ रखे थोड़ा सा और लेटे
रहना 11 तब तुम्हारी गरीबी रास्ते के लुटेरे
और शस्त्रधारी की तरह तुम पर आ पड़ेगी।
12 निकम्मा और दुष्ट इन्सान वह है जो टेढ़ी
मेंढ़ी बातें बोलता फिरता है। 13 वह नैन से
सैन करता है वह अपने पैरों और उंगलियों
से इशारा करता है। 14 वह अपने बुरे मन
में हर समय बुरी योजनाएँ बनाता है और
झगड़े-रगड़े फैलाता है। 15 इसलिए अचानक
उस पर मुसीबत आ पड़ेगी, वह एक सेकेण्ड
में ऐसा बर्बाद हो जाएगा कि बचने का कोई
तरीका नहीं रहेगा 16 प्रभु को छः बातों से
दुश्मनी है बल्कि सात हैं जिन से उन्हें नफ़रत
है: 17 घमण्ड से भरी आँखें, झूठ बोलने वाली
जीभ, बेगुनाह का खून बहाने वाले हाथ
18 बुरी योजना बनाने वाला मन, बुराई के
लिए जल्दी से दौड़ने वाले पैर , 19 झूठ बोलने
वाला गवाह और भाईयों में झगड़ा लगाने
वाला इन्सान। 20 हे मेरे बेटे, अपने पिताजी
की आज्ञा मानो और अपनी माताजी की
शिक्षा को न छोड़ना 21 उनको अपने मन में
हर समय बाँधे रहना और उन्हें अपने गले का
हार बना लो 22 जब तुम चलोगे तो उनकी
शिक्षा तुम्हें राह दिखाएगी, जब तुम सोते
रहोगे, वह तुम्हारी रक्षा करेगी और जागते
समय तुम से बातें करेगी 23 क्योंकि आज्ञा तो
दीपक और शिक्षा रोशनी है और शिक्षा के
लिए ताड़ना[a] ज़िन्दगी का रास्ता है। 24 इनसे
तुम बुरी महिला अर्थात व्यभिचारिणी की

[a] **6.23** डाँट, चोट

चिकनी चुपड़ी बातों से बचोगे। 25 उसकी
खूबसूरती को देख कर अपने मन में उसकी
चाह मत करना, वह अपनी पलकों से तुम्हें
फँसाने न पाए। 26 वेश्यागमन की वजह से
इन्सान की कीमत तो रोटी के टुकड़े के
बराबर ही रह जाती है और व्यभिचारिणी
एक कीमती जीवन का शिकार कर लेती है।
27 क्या ऐसा हो सकता है कि कोई अपनी
छाती पर आग रखे और उसके कपड़े न
जलें? 28 या कोई इन्सान अंगारों पर चले
और उसके पैर न झुलसें? 29 ऐसा ही वह है
जो पराई महिला के पास जाकर उसके साथ
यौन सम्बन्ध करे, वह सज़ा से न बच पाएगा।
30 अगर भूख मिटाने के लिए कोई चोरी करे,
तो लोग उसे तुच्छ नहीं ठहराते। 31 यदि
वह पकड़ लिया जाता है तो उसे सात गुना
भरना पड़ता है, यहाँ तक कि चुकाने के लिए
अपने घर का सब कुछ देना पड़ सकता है।
32 लेकिन जो परमहिला-गमन करता है, वह
महा बेवकूफ़ है, जो अपनी बर्बादी चाहता
है वही ऐसा करता है 33 उसको घायल और
शर्मिन्दा होना पड़ेगा और उसकी बदनामी
कभी न मिटेगी। 34 ईर्ष्या से इन्सान आग
बबूला हो जाता है और बदला लेने के दिन
वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। 35 वह रिश्वत पर
निगाह न डालेगा और चाहे तुम उसे बहुत
कुछ दो, फिर भी वह मानेगा नहीं।

7 हे मेरे बेटे, मेरी बातों को माना करो
और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में
रख लो 2 मेरी आज्ञाओं को मानो इस से तुम
ज़िन्दा रहोगे और शिक्षा को अपनी आँख की
पुतली समझो। 3 उनको अपनी उँगलियों में
बाँधो और अपने मन की पटिया पर लिख
लो 4 बुद्धि से कहो, “तुम मेरी बहन हो,”
और समझ को अपना गहरा साथी बना
लो 5 तब तुम पराई महिला से जो चिकनी
चुपड़ी बातें बोलती है, बच सकोगे। 6 मैंने
जब एक दिन अपने घर की खिड़की से झाँका
7 तब भोले-भाले लोगों के बीच एक बेवकूफ़
जवान को देखा 8 वह उस बदचलन औरत
के घर के पास की सड़क पार करके टहलने
लगा 9 उस समय दिन ढल चुका था और
शाम हो चुकी थी, सच कहें तो रात का घुप्प
अँधेरा छाने लगा था 10 और देखो, एक धूर्त,
महिला उस से मिली, जिस की वेष-भूषा देह
व्यापार करने वाली की सी थी 11 वह शान्ति
रहित और चंचल थी और उसके पाँव घर
पर टिकते ही नहीं थे 12 कभी वह सड़क
में और कभी चौक में दिखती थी, वह हर
मोड़ पर अपने शिकार के लिए मौका ढूँढती
थीं 13 तब उसने उस नवजवान को पकड़
कर चूमा और बेशर्मी से मुँह बना कर बोली,
14 “मैंने पूजा-पाठ कर लिया है और अपनी
मन्नतें भी पूरी की हैं। 15 इसलिए मैं तुम से
मिलने के लिए आयी हूँ। मैं तुम को पाने
की कोशिश में लगी हुयी थी और तुम मुझे
मिल भी गए। 16 मैंने अपने पलंग के बिछौने
पर मिस्र के रंग-बिरंगे कपड़े बिछाए हैं।
17 गंधरस अगर और दालचीनी से मैंने अपने
बिस्तर को खुशबूदार बनाया है 18 इसलिए
चलो, हम सुबह तक मस्ती में डूबे रहें और
एक दूसरे के साथ मज़ा करें। 19 क्योंकि मेरा
पति घर पर नहीं है, वह लंबे सफ़र पर निकल
चुका है। 20 वह अपने साथ काफी पैसा भी ले
गया है और पूर्णिमा के दिन वापस लौटेगा।”
21 लुभावनी बातें कह कर उस महिला ने
नवजवान को ज़बरदस्त जाल में फँसा लिया
और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से अपने
कब्ज़े में कर लिया। 22 वह तुरन्त उसके पीछे

चल दिया, जिस तरह से बैल बन्द किए जाने
या बेड़ी पहने एक बेवकूफ़ दण्ड[a] पाने के
लिए ले जाया जाता है 23 आखिर में उस
नवजवान का कलेजा तीर से छेदा जाएगा,
वह उस चिड़िया की तरह है, जो जाल की
तरफ़ तेजी से उड़े और न जानती हो कि वह
फँस जाएगी। 24 अब हे मेरे बेटो, मेरी सुनो
और मेरी बातों पर मन लगाओ 25 तुम्हारा मन
ऐसी औरत के रास्तों की तरफ़ न फिरे और
उसकी डगरों में भूल कर न जाना, 26 क्योंकि
उसने कितनों को फँसा कर बर्बाद कर डाला
है, ऐसे लोगों की एक बड़ी संख्या है। 27 उस
का घर अधोलोक[b] का रास्ता है, वह मौत
के घर तक पहुँचाता है।

8 क्या बुद्धि की पुकार सुनने को नहीं
मिलती है और समझ ऊँची आवाज़ से
नहीं बोलती है? 2 वह तो रास्ते के किनारे,
ऊँची जगहों की चोटियों पर जहाँ सड़केम
मिलती हैं, खड़ी होती है। 3 नगर के प्रवेश
द्वार पर, फ़ाटकों के पास अर्थात दरवाज़ों
पर, वह ऊँची आवाज़ से कहती है, 4 "हे
लोगो, मैं तुम को पुकारती हूँ, मेरी बातें सभी
के लिए हैं। 5 हे भोलो, चतुर बनो, हे मूर्खों,
बुद्धि को पहचानो। 6 सुनो, क्योंकि मैं बड़ी
बातें कहूँगी, मेरा मुँह खुलते ही सीधी बातें
निकलेगी 7 क्योंकि मेरा मुँह सच्चाई की ही
बातें करेगा, दुष्टता की बातों से मुझे नफ़रत
है। 8 मेरे मुँह की सब बातें भलाई की होती
हैं, उसमें से कोई टेढ़ी या उलट फेर की नहीं
होती है। 9 समझ वाले के लिए वे सब सरल
और ज्ञान हासिल करने वालों के लिए बहुत
सीधी हैं। 10 चाँदी नहीं, लेकिन मेरी शिक्षा
को अपना लो, चोखे सोने के बजाए ज्ञान को
हासिल करो। 11 क्योंकि बुद्धि रत्नों से उत्तम
है। उसकी तुलना किसी भी मनभावनी चीज
से नहीं की जा सकती है। 12 मैं, बुद्धि चतुराई
में रहती हूँ ज्ञान और विवेक मेरे हैं। 13 बुराई
से दुश्मनी रखना ही प्रभु को आदर देना है।
घमण्ड, अहंकार, बुरी चाल और उलट-फेर
की बात से मैं बैर रखती हूँ। 14 सलाह और
खरी बुद्धि मेरी ही है। मैं समझ हूँ और पराक्रम
भी मेरा है। 15 मेरे द्वारा ही राजा राज्य करते
हैं और अधिकारी इन्साफ़ करते हैं। 16 मेरी
मदद ही से शासक ऊँचे पद वाले,रईस और
दुनिया के सब न्यायी राज्य करते हैं। 17 जो
मुझ से मोहब्बत रखते हैं, उन से मैं भी
मोहब्बत रखती हूँ। जो मुझको बड़े सवेरे उठ
कर खोजते हैं, मुझे पा जाते हैं। 18 दौलत और
इज्ज़त मेरे पास हैं, यहाँ तक कि ठहरने वाली
दौलत और धर्म[c] भी मैं बाँटती हूँ। 19 मेरा फल
शुद्ध सोने से ज़्यादा और मेरी उपज शुद्ध चाँदी
से बढ़ कर है 20 मैं धर्म[d] के रास्तों पर ही
पायी जाती हूँ 21 ताकि मुझ से प्रेम रखने वाले
दौलत पा सकें और उनके खज़ाने भर जाएँ।
22 प्रभु ने मुझे अपने काम की शुरूवात में यहाँ
तक कि उस से पहले बनाया। 23 मैं हमेशा
से वरन् शुरूवात ही से, या दुनिया के बनाए
जाने से पहले पैदा की गयी। 24 जब न तो
गहरा समुद्र या और न पानी के सोते थे, तब
ही से मैं उत्पन्न हुयी। 25 पहाड़ और पहाड़ियों
के बनाए जाने से पहले मैं सृजी गयी। 26 जब
प्रभु ने पृथ्वी और मैदानों को नहीं बनाया
था, न ही धरती के धूल के कण बनाए गए
थे। 27 जब प्रभु ने आकाश को बनाया, मैं
वहाँ थी। जब उन्होंने गहरे समुद्र के ऊपर
आकाशमण्डल ताना, तब भी। 28 जब उन्होंने
ऊपर के आकाशमण्डल को स्थिर किया
और गहरे समुद्र के सोते फूटने लगे 29 जब
उन्होंने समुद्र की सीमा ठहरायी ताकि पानी

[a] **7.22** सज़ा [b] **7.27** नरक [c] **8.18** इन्साफ़ [d] **8.20** ईमानदारी और इन्साफ़

उनकी आज्ञा के खिलाफ़ न जा सके और
जब वह पृथ्वी की नींव की डोरी लगा रहे
थे। 30 तब मैं कारीगर[a] के समान वहाँ थीं
और हर दिन मैं उनकी खुशी थी और हर वक्त
उनके सामने खुश रहा करती थी। 31 मैं उनकी
बसाई हुयी पृथ्वी से प्रसन्न थी और मेरा सुख
लोगों की संगति में था 32 इसलिए अब हे मेरे
बच्चो मेरी, सुनो क्या ही आशीषित हैं वे जो मेरे
रास्ते का पकड़े रहते हैं। 33 शिक्षा को सुनो
और अक्लमन्द बनो उसके बारे में अनसुनी
मत करो। 34 क्या ही आशीषित है वह इन्सान
जो मेरी सुनता है और मेरी चौखट पर हर दिन
खड़ा रहता है और मेरे दरवाज़ों के खम्भों
के पास निगाह किए रहता है। 35 क्योंकि जो
मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है और
प्रभु उस से खुश होते हैं। 36 लेकिन जो मेरे
खिलाफ़ अपराध करता है ,वह अपने ही
ऊपर मुसीबत लाता है। जितने मुझ से दुश्मनी
रखते हैं, वे मौत से मोहब्बत रखते हैं।

9 बुद्धि ने अपना घर बनाया और उसके
सातों खंभे गढ़े हुए हैं। 2 उसने एक
आलीशान दावत की तैयारी की है। 3 दावत
में हर एक को बुलाने के लिए उसने अपने
नौकरों को भेजा है शहर की ऊँची जगहों
से वह बुलाती है। 4 भोला इन्सान मुड़ कर
यहीं आए और जो बिना समझ है, उस से
कहती है, 5 "आओ मेरी रोटी खाओ, और
मेरे मसाला मिलाए हुए दाखमधु को पीओ
6 भोलेपन का साथ छोड़ो और ज़िन्दा रहो,
समझ के रास्ते में सीधे चलो।" 7 जो ठट्ठा
करने वाले को सिखाता है, वह शर्मिन्दा
होता है, और जो दुष्ट जन को डाँटता है
वह कलंकित होता है। 8 ठट्ठा करने वाले
को मत डाँटो, ऐसा न हो कि वह तुम से
दुश्मनी रखे, बुद्धिमान को डाँटो, वह तुम
को चाहेगा। 9 बुद्धिमान को सिखाओ, वह
ज़्यादा बुद्धिमान हो जाएगा। भले इन्सान को
सिखाओ वह और ज़्यादा सीखेगा। 10 प्रभु से
डरना बुद्धि की शुरूआत है और परमपवित्र
प्रभु को जानना ही समझ है। 11 मेरे द्वारा
तुम्हारी उम्र बढ़ेगी और तुम्हारी ज़िन्दगी के
साल बढ़ जाएँगे। 12 अगर तुम बुद्धिमान हो,
तो बुद्धि का फल तुम ही भोगोगे यदि तुम
ठट्ठा करो, तो अकेले ही भोगोगे। 13 बेवकूफ़
महिला बक-बक करने वाली है, वह भोली
है और कुछ नहीं जानती है। 14 वह अपने
घर के दरवाज़े में और नगर के ऊँचे स्थानों
में अपने आसन पर बैठी हुयी 15 जो राहगीर
अपना-अपना रास्ता पकड़े हुए सीधे चले
जाते हैं, उनको यह कह कह कर पुकारती
है, 16 "भोला इन्सान यहीं मुड़ कर आए",
जो बिना समझ है, वह उस से कहती है,
17 "चोरी का पानी मीठा होता है और लुके
छिपे की रोटी अच्छी लगती है।" 18 और वह
यह नहीं जानता है, कि वहाँ मरे हुए पड़े हैं
और उस महिला के नेवताहारी अधोलोक
की निचली जगहों में पहुँच चुके हैं।

10 बुद्धिमान पुत्र[b] से पिताजी खुश होते
हैं, लेकिन बेवकूफ़ सन्तान की
वजह से माँ जी उदास रहती हैं। 2 दुष्टों की
रखी हुयी दौलत से फ़ायदा नहीं, लेकिन खरे
जीवन की वजह से मौत से बचाव होता है।
3 भले इन्सान को प्रभु भूखा मरने नहीं देते हैं,
लेकिन दुष्टों की चाह वह पूरी नहीं होने देते
हैं। 4 जो काम में ढिलाई करता है वह गरीब
हो जाता है, लेकिन मेहनती लोग अपने हाथों
से दौलतमंद हो जाते हैं। 5 जो बेटा गरमी
के मौसम में बटोरता है, वह समझ से काम

[a] **8.30** इंजीनियर [b] **10.1** बच्चों

करने वाला होता है, लेकिन जो बेटा कटनी
के वक्त भारी नींद में पड़ा रहता है, वह शर्म
का कारण ठहरता है। 6 भले इन्सान पर बहुत
से आशीर्वाद होते हैं, लेकिन दुष्टों के चेहरे
पर बदमाशी दिखती है। 7 (अच्छे इन्सान
को याद करके लोग खुश होते हैं, लेकिन
दुष्टों का नाम मिट जाता है। 8 जो अक्लमन्द
है, वह आज्ञा स्वीकार करता है, लेकिन जो
बकवादी और बेवकूफ़ है, वह पछाड़ खाता
है। 9 जो ईमानदारी से जीता है वह निडर
चलता है, लेकिन जो टेढ़ी चाल-चलता है
उस का हाल सब को मालूम हो जाता है।
10 जो नैन से सैन करता है उस से औरों
को दुख मिलता है, और जो बकवादी और
बेवकूफ़ है, वह पछाड़ खाता है। 11 अच्छे
इन्सान का मुँह जीवन का सोता है, लेकिन
उपद्रव दुष्टों का मुँह छा लेता है। 12 दुश्मनी
से झगड़े पैदा होते हैं, परन्तु प्यार से सब
अपराध ढँप जाते हैं। 13 समझ वालों की
बातों में बुद्धि पायी जाती है, बेअक्ल की
पीठ के लिए चाबुक है। 14 अक्लमन्द लोग
ज्ञान को रख छोड़ते हैं, लेकिन बेवकूफ़ के
बोलने से बर्बादी पास आती है। 15 अमीर
की दौलत उस का मज़बूत शहर है, किन्तु
गरीब लोग गरीबी की वजह से बर्बाद होते
हैं। 16 खरे व्यक्ति की मेहनत से उसकी उम्र
बढ़ती है, लेकिन दुष्ट अपने लाभ को अपराध
करने में लुटा देता है। 17 जो सिखायी बातों
के हिसाब से ज़िन्दगी बिताता है वह ज़िन्दगी
के रास्ते पर है, लेकिन जो डाँट से मुँह मोड़ता
है, वह भटकता है। 18 जो दुश्मनी को छिपा
रखता है, वह झूठ बोलता है और जो झूठी
निन्दा फैलाता है, वह बेवकूफ़ है। 19 जहाँ
लोग ज़्यादा बोलते हैं, वहाँ अपराध भी होता
है, लेकिन जो अपने मुँह को बन्द रखता है
अक्ल से काम करता है। 20 सच्चे आदमी की
बातें तो बढ़िया चाँदी हैं, लेकिन दुष्टों का
मन बहुत हल्का होता है। 21 धर्मी की बातों
से बहुतों का पालन-पोषण होता है, लेकिन
बेवकूफ़ लोग निर्बुद्धि होने की वजह से मर
जाते हैं। 22 दौलत प्रभु की आशीष ही से
मिलती है, और वह उसके साथ दुख नहीं
मिलाते। 23 दुष्टता करना बेवकूफ़ को हँसी
की बात जान पड़ती है, लेकिन समझ वाले
इन्सान में बुद्धि रहती है। 24 दुष्ट जन जिस
मुसीबत से डरता है, वह उस पर आ ही
जाती है, लेकिन भले लोगों की लालसा[a] पूरी
होती है। 25 बवण्डर निकल जाते ही दुष्ट जन
गायब हो जाता है, लेकिन धर्मी हमेशा तक
स्थिर है। 26 जैसे दाँत को सिरका और आँख
को धुआँ, वैसे ही आलसी उनको लगता
है जो उसको कहीं भेजते हैं। 27 प्रभु के डर
मानने से उम्र बढ़ती है, लेकिन दुष्टों का जीवन
थोड़े ही दिनों का होता है। 28 सीधे इन्सान
को उम्मीद रखने से खुशी होती है, लेकिन
दुष्टों की उम्मीद टूट जाती है। 29 प्रभु खरे
इन्सान का किला ठहरते हैं, लेकिन बेकार
लोग बर्बाद होते हैं। 30 प्रभु को जानने वाला
हमेशा अटल रहेगा, लेकिन दुष्ट पृथ्वी पर
बसने न पाएँगे 31 प्रभु प्रेमी के मुँह से बुद्धि
टपकती है, पर उलट फेर की बात कहने
वाले की जीभ काटी जाएगी। 32 खरा इन्सान
सोच-समझ कर ग्रहणयोग्य बात बोलता है,
लेकिन दुष्टों के मुँह से उलट फेर की बातें
निकलती हैं।

11 धोखेबाज़ी के तराजू से प्रभु को
नफ़रत है, लेकिन सही बात[b] से
वह खुश होते हैं। 2 जब घमण्ड होता है तब
बेइज्ज़ती भी होती है, लेकिन नम्र लोगों में

[a] **10.24** आरज़ू [b] **11.1** पूरी तौल

बुद्धि होती है। 3 सीधे लोग अपनी ईमानदारी
से अगुवाई पाते हैं, लेकिन विश्वासघाती[a]
अपने कपट से बर्बाद होते हैं। 4 सज़ा के दिन
दौलत काम नहीं आती है। लेकिन सच्चाई,
ईमानदारी और मौत से बचाती है। 5 सच्चे
इन्सान का रास्ता ईमानदारी की वजह से
सीधा होता है, लेकिन दुष्ट अपनी बुराई की
वजह से बर्बाद हो जाता है। 6 सच्चे लोगों
का चालचलन उन्हें छुड़ाता है लेकिन कपटी
अपनी बुरी इच्छाओं में फँस जाते हैं। 7 जब
एक बुरा व्यक्ति मरता है, उसकी आशा
उसके साथ ही खत्म हो जाती है, 8 खरा
आदमी मुसीबत से छूट जाता है, लेकिन दुष्ट
उसी मुसीबत[b] में फँस जाता है। 9 भक्तिहीन
व्यक्ति अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात
से बिगाड़ता है, लेकिन प्रभु के लोग ज्ञान के
द्वारा बचते हैं। 10 जब भले लोगों का कल्याण
होता है, तब नगर के लोग खुश होते हैं
लेकिन जब दुष्ट बर्बाद होते हैं तो जयजयकार
होता है। 11 सीधे[c] लोगों के आशीर्वाद से
नगर की तरक्की होती है, लेकिन दुष्टों के
मुँह की बात से वह ढाया जाता है। 12 जो
किसी को तुच्छ जानता है वह बेवकूफ़ है,
लेकिन समझदार इन्सान चुपचाप रहता है।
13 जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट
करता है, लेकिन विश्वासयोग्य मनुष्य बात
को छिपा रखता है 14 जहाँ बुद्धि से योजना
नहीं बनती, वहाँ ज़्यादा जनता परेशानी में
पड़ती है, लेकिन ज़्यादा सलाह देने वालों
के कारण बचाव होता है। 15 जो परदेशी
की ज़िम्मेदारी लेता है, वह ज़्यादा तकलीफ़
उठाता है लेकिन जो ज़मानत से नफ़रत करता
है, वह बिना डर रहता है। 16 कृपा करने
वाली महिला इज़्ज़त नहीं खोती है और
उतावले[d] लोग दौलत नहीं खोते हैं। 17 दयालु
इन्सान अपना ही फ़ायदा करता है, लेकिन
जो निर्दयी है, वह अपनी ही देह को पीड़ा
देता है। 18 दुष्ट झूठी कमाई लाता है, लेकिन
जो ईमानदारी से जीता है, उसको ज़रूर उस
का फ़ायदा मिलता है। 19 जो धर्म[e] में मज़बूत
रहता है, वह जीवन पाता है, लेकिन जो बुराई
का पीछा करता है, वह मौत का निवाला
बन जाता है। 20 जो लोग मन के टेढ़े है,
उन से प्रभु को नफ़रत होती है, लेकिन वह
ईमानदारी से जीने वालों से खुश होते हैं।
21 बिना किसी शक, मैं कहता हूँ, बुरा इन्सान
निर्दोष नहीं ठहराया जाएगा, लेकिन धर्मी का
वंश बचाया जाएगा। 22 जो खूबसूरत महिला
विवेक नहीं रखती वह नाक में सोने की
नथ पहिने हुए सुअर की तरह है। 23 भले
लोगों की लालसा सिर्फ भलाई की होती हैं,
लेकिन दुष्टों की आशा का परिणाम गुस्सा
ही होता है। 24 उदार होने के बावजूद एक
व्यक्ति समृद्ध हो जाता है, लेकिन एक कंजूस
व्यक्ति आर्थिक रीति से कमज़ोर रह जाता है।
और ऐसे भी हैं जो वाजिब से कम देते हैं और
इस से उन्हें कमी ही होती है। 25 उदार व्यक्ति
स्वस्थ हो जाता है और जो दूसरों की खेती
सींचता है उसकी खेती भी सींची जाएगी।
26 जो जमाखोरी करता है, उसको लोग बुरा-
भला कहते हैं, लेकिन जो अनाज बेच देता
है, उसे लोग आशीर्वाद देते हैं। 27 जो भलाई
की कोशिश करता है वह दूसरों की खुशी
चाहता है, लेकिन जो दूसरों की बुराई की
ताक में रहता है, उसी पर बुराई आ पड़ती
है। 28 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखता है
वह गिर जाता है। लेकिन भले लोग नए पत्ते
की तरह लहलहाते हैं। 29 जो अपने खानदान
को दुख देता है, उस का हिस्सा हवा ही होगी
और बेवकूफ़ अक्लमन्द का गुलाम हो जाता

[a] **11.3** धोखेबाज़ [b] **11.8** संकट, समस्या [c] **11.11** खरे [d] **11.16** उग्र [e] **11.19** सच्चाई

है। 30 खरे व्यक्ति का प्रतिफल ज़िन्दगी का
पेड़ होता है और अक्लमन्द इन्सान लोगों के
मन को मोह लेता है। 31 देखो, धर्मी को पृथ्वी
पर उस का फल[a] मिलेगा, तो ज़रूर ही दुष्ट
और गुनाहगार को भी।

12 जो सिखाए जाने में दिलचस्पी
रखता है, वह ज्ञान से प्यार रखता
है, लेकिन जो डाँट से दुश्मनी रखता है वह
जानवर की तरह है। 2 भले इन्सान से तो प्रभु
खुश होते हैं, लेकिन बुरी योजना बनाने वाले
को वह आरोपी ठहराते हैं। 3 कोई इन्सान भी
बुराई की वजह से स्थिर नहीं होता, लेकिन
भले लोगों की जड़ उखड़ने की नहीं। 4 भली
पत्नी अपने पति का ताज है, लेकिन जो शर्म
के काम करती है वह मानो उसकी हड्डियों के
सड़ने का कारण होती है। 5 भले लोगों की
कल्पनाएँ इन्साफ़ ही की होती है, लेकिन
दुष्टों की योजनाएँ छल की हैं। 6 दुष्टों की
बातचीत खून करने के लिए मौका ढूँढने के
बारे में होती है, लेकिन सीधे लोग अपने मुँह
की बात से बचाने वाले[b] होते हैं। 7 खराब
लोग ढा दिए जाते हैं और बर्बाद हो जाते हैं,
लेकिन सही आदमी का खानदान बना रहता
है। 8 इन्सान की बुद्धि के अनुसार उसकी
बड़ाई होती है; लेकिन कुटिल[c] तुच्छ जाना
जाता है। 9 जो खाने की आस लगाए रहता है
और बड़ाई मारता है, उस से नौकर रखने
वाला छोटा मनुष्य भी बेहतर है। 10 भला
मनुष्य अपने जानवर का भी ख्याल रखता
है, लेकिन दुष्टों की दया भी क्रूरता है। 11 जो
अपनी ज़मीन को जोतता है, वह पेट भर
खाता है। लेकिन जो निकम्मों के साथ समय
बिताता है वह बेवकूफ़ ठहरता है। 12 दुष्ट जन
बुरे लोगों के जाल की चाह रखते हैं, लेकिन
भले लोगों की जड़ें हरी-भरी रहती हैं। 13 बुरा
इन्सान अपनी जीभ की बुराई की वजह से
फँस जाता है, लेकिन सच्चा इन्सान परेशानी
में से निकल आएगा। 14 मनुष्य अपने वचनों
के फल के द्वारा अच्छी चीज़ों[d] से तृप्त होता है
जो जैसा करता है, वैसा ही भरता हैं। 15 मूर्ख
अपने रास्ते को सही समझता है, लेकिन
समझदार दूसरों की सुनता है। 16 बेवकूफ़
एक दम गुस्सा हो जाता है, लेकिन एक
चतुर[e] बेइज्ज़ती किए जाने पर खामोश रहता
है। 17 एक ईमानदार गवाह सच बोलता है,
झूठा गवाह झूठ बोलता है। 18 कुछ लोग
तीखी टिप्पणियाँ करते है, लेकिन बुद्धिमान
लोगों की बातें सेहत लाती हैं। 19 सच्चे शब्द
समय पर खरे उतरते हैं, लेकिन झूठ पल भर
का होता है। 20 जो लोग बुराई की योजना
बनाते हैं, उनके मन में धोखा रहता, लेकिन
जो मेल को बढ़ावा देते है, उनके भीतर खुशी
रहती है। 21 धर्मी[f] लोगों को हानि नहीं होती
है, लेकिन बुरे लोग विपत्ति[g] से भरे रहते हैं।
22 झूठे ओठों से प्रभु नफ़रत करते हैं, लेकिन
जो लोग विश्वास से काम करते हैं, उन से
वह खुश होते हैं। 23 चतुर[h] अपने ज्ञान का
दिखावा नहीं करता है, लेकिन मूर्ख अपनी
मूर्खता का बखान ऊँचे शब्द से करता रहता
है। 24 सख्त मेहनत करने वाला प्रधान बनेगा
लेकिन आलसी गुलाम बन जाएगा। 25 चिन्ता
से इन्सान उदास हो जाता है, लेकिन भली
बातों[i] से मन हिम्मत पाता है। 26 धर्मी[j] अपने
पड़ोसी का मार्गदर्शन करता है, लेकिन दुष्ट[k]
की जीवन शैली से लोग गुमराह हो जाते

[a] **11.31** नतीजा [b] **12.6** छुड़ाने वाले [c] **12.8** बुरे मन वाला [d] **12.14** भलाई [e] **12.16** अक्लमन्द
[f] **12.21** सच्चे [g] **12.21** परेशानियों [h] **12.23** बुद्धिमान [i] **12.25** मीठे शब्दों [j] **12.26** एक भला इन्सान
[k] **12.26** खराब इन्सान

हैं। 27 सुस्त लोग अपना खाना तक नहीं
पकाते हैं, लेकिन कामकाजी[a] हर एक मौके
का फ़ायदा उठा लेते हैं। 28 धर्मी का मार्ग[b]
ज़िन्दगी तक और बुरे व्यक्ति का मौत तक
पहुँचता है।

13 एक समझदार बेटा अपने पिताजी
की कही बातों को ध्यान से सुनता
है, लेकिन एक ठट्ठा करने वाला घुड़की[c]
को भी नहीं सुनता है। 2 अपने मुँह के शब्दों
की वजह से एक इन्सान अच्छी चीजों का
आनन्द उठाएगा, लेकिन विश्वासघाती[d] का
प्राण[e] हिंसा से ही तृप्त होता है। 3 जो अपने
मुँह की रक्षा करता है, वह अपना जीवन
बचाता है। लेकिन जो अपने ओठों को
ज़्यादा खोलता है, वह बर्बाद हो जाएगा।
4 आलसी इन्सान का मन[f] लालसा करता है,
लेकिन कुछ पाता नहीं है। मेहनती इन्सान की
इच्छाएँ बहुतायत से पूरी होती हैं। 5 एक भला
इन्सान[g] झूठ से नफ़रत करता है, लेकिन
दुष्ट इन्सान सुस्त होता है, उसे शर्मिन्दा
होना पड़ता है। 6 जो अपने चालचलन में
वफ़ादार है उसकी वफ़ादारी उसकी सुरक्षा
है, लेकिन दुष्टता बुरे व्यक्ति को उखाड़
फेंकती है। 7 ऐसा इन्सान भी है जो संपन्नता
का दिखावा करता है, लेकिन वह होता
है कंगाल। 8 किसी इन्सान के लिए उसकी
दौलत उसकी ज़िन्दगी की छुड़ौती बन
सकती है, लेकिन गरीब किसी की धमकी
की परवाह नहीं करता। 9 भले इन्सान की
ज़िन्दगी में रोशनी और खुशी होती है, लेकिन
बुरे इन्सान की रोशनी बुझ जाएगी। 10 घमण्ड
की वजह ही से झगड़े होते है, लेकिन जो
सलाह अच्छे से सुनता है, वही बुद्धिमान है।
11 बेईमानी से हासिल की हुयी दौलत उड़
जाती है, लेकिन जो मेहनत से इकट्ठा करता है
तरक्की करता है। 12 उम्मीद पर पानी फिरने
से मन बैठ जाता है, लेकिन मनोकामना पूरी
होना, ज़िन्दगी का पेड़ है। 13 जो प्रभु के
वचन को हल्का-फुलका जानता है, बर्बाद हो
जाएगा, लेकिन जो आज्ञा मानने में सतर्कता
बरतता है, उसको अच्छा फ़ल मिलता है।
14 बुद्धिमान की सिखायी बातें जीवन का
सोता है, उसके द्वारा लोग मौत के फन्दों से
बच सकते हैं। 15 सुबुद्धि के कारण अनुग्रह
होता है, लेकिन विश्वास भले लोगों[h] का
रास्ता मुश्किल का होता है। 16 हर एक समझ
वाला इन्सान ज्ञान से काम लेता है, लेकिन
बेवकूफ़ अपनी बेवकूफ़ी दिखा ही डालता
है। 17 एक दुष्ट संदेशवाहक परेशानी में पड़
जाता है लेकिन ईमानदार राजदूत सेहत लाता
है। 18 जो सीख से नफ़रत करता है, गरीबी
और शर्म का सामना करता है। लेकिन जो
सुधारे जाने को अहमियत देता है, वह इज्ज़त
पाएगा। 19 इच्छा पूरी होने पर मन खुश हो
जाता है, लेकिन बुराई छोड़ना बेवकूफ़ों के
लिए घिनौना है। 20 जो व्यक्ति अक्लमन्द के
साथ रहता है, अक्लमन्द हो जाता है, लेकिन
मूर्ख का साथी बर्बाद हो जाएगा। 21 परेशानी
गुनाहगारों का पीछा करती रहती है, लेकिन
भले इन्सान को नतीजा अच्छा ही मिलेगा।
22 एक अच्छा इन्सान[i] अपने नाती-पोतों के
लिए एक अच्छा नमूना छोड़ जाता है लेकिन
अपराधियों[j] की दौलत ईमानदार इन्सान तक
पहुँच जाती है। 23 गरीब की ज़मीन पर भोजन
वस्तु की भरमार होती है, लेकिन अन्याय की
वजह से सब उड़ जाती है। 24 जो अपने बेटे
पर छड़ी नहीं चलाता, वह उस से नफ़रत

[a] 12.27 मेहनती [b] 12.28 अच्छे व्यक्ति का रास्ता [c] 13.1 डाँट [d] 13.2 गुनाहगारों [e] 13.2 पेट
[f] 13.4 प्राण [g] 13.5 धर्मी [h] 13.15 अपराधी [i] 13.22 भला मनुष्य [j] 13.22 गुनाहगारों

करता है, लेकिन जो उस से प्रेम करता है,
सावधानी से अनुशासन में लाता है। 25 भला
इन्सान मन भर कर खाता है, लेकिन दुष्ट की
भूख कभी मिटती ही नहीं।

14 हर बुद्धिमान महिला अपने घर को
बनाती है, लेकिन बेवकूफ़ अपने
हाथों से बिगाड़ डालती है। 2 जिस का जीवन
ईमानदारी का है, वह प्रभु से डरता है, लेकिन
जिस के रास्ते दुष्टता के हैं वह प्रभु को तुच्छ
समझता है। 3 मूर्ख के मुँह की घमण्ड की
बातें उसकी पीठ के लिए छड़ी हैं। लेकिन
बुद्धिमान के ओठ उसको बचा-कर रखेंगे।
4 जहाँ बैल नहीं वहाँ उनके रहने की जगह
साफ़ सुथरी तो होगी, लेकिन ज़्यादा आमदनी
तभी होगी, जब ज़्यादा बैल होंगे। 5 एक सच्चा
गवाह झूठ नहीं कहेगा, लेकिन झूठा गवाह
झूठ बोलेगा। 6 एक हँसी उड़ाने वाला बुद्धि
की तलाश में रहता है, लेकिन पाता नहीं है,
लेकिन जो परख सकता है, उसी के पास
समझ है। 7 जब बेवकूफ़ आदमी के ओठों
में ज्ञान न देखो, तो उसके पास से हट जाना।
8 बुद्धिमान लोग जानते हैं कि किस दिशा में
चले जा रहे हैं, लेकिन मूर्ख अपने आपको
धोखा देते हैं। 9 बेवकूफ़ अपराध[a] को हँसी
में उड़ा देते हैं, लेकिन सही लोग उसे मान
लेते हैं और मेल की कामना करते हैं। 10 हर
एक मन अपनी कड़वाहट को जानता है और
उसकी खुशी को कोई बाँट नहीं सकता।
11 दुष्ट का घर बर्बाद हो जाएगा, लेकिन प्रभु
प्रेमी का घराना आबाद हो जाएगा। 12 हर
व्यक्ति के सामने एक रास्ता है जो सही
लगता है, लेकिन उस का अन्त मौत होता
है। 13 हँसी एक भारी मन को छिपा देती है,
हँसी के बाद दुख बना रहता है। 14 जिस
का मन प्रभु से भटक जाता है, वह अपने
चालचलन का फल भोगता है, अच्छे लोगों
को अच्छा परिणाम मिलता है। 15 भोले लोगों
को जो कुछ बतलाया जाता है, वे मान लेते
हैं। चतुर सावधानी से अपने कदमों पर नज़र
रखता है। 16 अक्लमद सावधानी बरतते हैं,
इसलिए खतरे से बच जाते हैं, बेवकूफ़ बड़ी
हिम्मत से आगे बढ़ जाते हैं। 17 जिन्हें जल्दी
गुस्सा आ जाता है, वे मूर्खता के काम करते
हैं, बुरी योजना बनाने वालों से नफ़रत की
जाती है। 18 भोले-भाले लोग बेवकूफ़ी ओढ़े
रहते हैं, लेकिन चतुर[b] ज्ञान का ताज पहने
रहता है। 19 बुरे लोग अच्छे लोगों के सामने
झुक जाएँगे। और दुष्ट ईमानदार के दरवाज़े
पर। 20 गरीब का पड़ोसी भी उस से नफ़रत
करता है, लेकिन अमीर के ढेर से दोस्त होते
हैं। 21 जो अपने पड़ोसी को नीचा समझता है,
वह गुनाह करता है, लेकिन खुश वह है जो
गरीब पर दया करता है। 22 जो बुरी योजना
बनाते हैं, क्या वे बहक नहीं जाते हैं? लेकिन
जो अच्छी योजना बनाते हैं, दया और सच्चाई
पाएँगे। 23 सब तरह की मेहनत में फ़ायदा है,
लेकिन ज़्यादा बकबक का नतीजा गरीबी
होती है। 24 बुद्धिमान का धन उस का मुकुट
है, लेकिन बेवकूफ़ों की बेवकूफ़ी ही उनका
भाग है। 25 एक सच्चा गवाह लोगों की जान
बचा लेता है, लेकिन एक झूठा गवाह झूठ
बोलता है उस से धोखा ही धोखा होता है।
26 प्रभु का डर मानने वाले का मज़बूत भरोसा
होता है और उसकी औलाद को शरणस्थान
मिलता है। 27 प्रभु का भय ज़िन्दगी का सोता
है, जो लोगों को मौत के फन्दे से निकालता
है। 28 जनसंख्या ज़्यादा होना राजा की शान
है, लेकिन कम होना गवर्नर[c] की बर्बादी
है। 29 जो गुस्से में धीमा है, उसके पास

[a] **14.9** गुनाह [b] **14.18** अक्लमन्द [c] **14.28** राजकुमार

बड़ी समझ है, लेकिन जिसे जल्दी गुस्सा
आता है, वह मूर्खता को बढ़ावा देता है।
30 एक अच्छा मन सारी देह के लिए जीवन
है लेकिन ईर्ष्या हड्डियाँ तक को गला डालती
हैं। 31 जो गरीब को दबाता है, वह उसके
सृष्टिकर्ता की बेइज्ज़ती करता है, लेकिन जो
उसे इज्ज़त देता है वह प्रभु की महिमा करता
है। 32 अपनी दुष्टता की वजह से दुष्ट उलट
दिया जाता है, लेकिन खरे इन्सान की मौत
में भी आशा है। 33 जिस के पास समझ है,
उसके मन में बुद्धि रहती है, लेकिन बेवकूफ़ों
के मन को सब जान जाते हैं। 34 सही जीवन
शैली से एक देश का नाम रौशन होता है,
लेकिन अपराध[a] से लोगों की बदनामी ही
होती है। 35 राजा एक अक्लमन्द नौकर की
भलाई करता है, लेकिन जो शर्म का काम
करता है उस पर गुस्सा होता है।

15 एक नम्र जवाब गुस्से को ठण्डा कर
देता है, लेकिन कठोर शब्द गुस्से
को भड़का देता है। 2 अक्लमन्द की जीभ
ज्ञान का इस्तेमाल सही तरीके से करती है
लेकिन बेवकूफ़ों का मुँह बेवकूफ़ी उगलता
है। 3 प्रभु की आखें सब जगह देखती हैं
बुराई को भी और अच्छाई को भी[b]। 4 एक
स्वस्थ जीभ[c] ज़िन्दगी का पेड़ है लेकिन
इसकी टेढ़ी बातें आत्मा को तोड़ डालती
हैं। 5 एक बेवकूफ़ अपने पिता के निर्देशों
को तुच्छ समझता है, लेकिन जो सुधार को
अपनाता है, वह समझदार है। 6 प्रभु के घर
में बहुत धन-दौलत रहती है, लेकिन दुष्ट की
आमदनी के साथ समस्याएँ लिपटी रहती है।
7 अक्लमन्द के ओठ ज्ञान बाँटते हैं लेकिन
बेवकूफ़ का मन ऐसा नहीं होता है। 8 दुष्ट
की कुर्बानी प्रभु के सामने घिनौनी है, लेकिन
धर्मी की प्रार्थना से वह खुश होते हैं। 9 दुष्ट
का रास्ता[d] प्रभु की निगाह में घिनौना है,
लेकिन जो लोग सही रास्ता अपनाते हैं, उन
से प्रभु प्रेम करते हैं। 10 जो राह को छोड़
देता है, उसे सुधार पसंद नहीं होता है, जो
अनुशासन[e] से नफ़रत करता है, वह बर्बाद हो
जाएगा। 11 अधोलोक[f] और विनाश लोक[g]
प्रभु से छिपी नहीं है तो इन्साफ़ का मन
उसने कैसा छिपा रह सकता है। 12 ठट्ठा करने
वाला अपने सुधारने वाले से प्रेम नहीं करता
है, न ही वह बुद्धिमान व्यक्ति के पास जाएगा।
13 एक खुश मन वाले के चेहरे पर भी खुशी
झलकती है, लेकिन भीतर के दुख से आत्मा
टूट जाती है। 14 जो समझ रखता है, उस का
मन ज्ञान की खोज में रहता है, लेकिन मूर्खों
के मन के लिए मूर्खता ही भोजन है। 15 दुखी
इन्सान के सभी दिन बुरे हैं लेकिन जिस के
मन में खुशी है वह मानो दावतें उड़ा रहा है।
16 प्रभु के डर के साथ थोड़ा बेहतर है, बजाए
इसके कि बहुत हो और ढेर सी समस्याएँ भी।
17 प्रेम के माहौल में साग सब्ज़ी का खाया
जाना बेहतर है, बजाए इसके कि महँगा
मांसाहारी खाना हो लेकिन नफ़रत के साथ
खाया जाए। 18 गुस्सैल इन्सान झगड़े को
बढ़ाता है, लेकिन जो गुस्सा करने में धीमा
है, झगड़े को रोकता है। 19 एक आलसी
इन्सान का रास्ता काटों की दीवार की तरह
है, लेकिन सच्चे इन्सान का रास्ता साफ़
सुथरा[h] होता है। 20 एक बुद्धिमान बेटा अपने
पिता को खुश रखता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति
अपनी माँ को तुच्छ समझता है। 21 जिस के
पास अक्ल की कमी है, वह बेवकूफ़ी की
बातों में खुश होता है, लेकिन एक समझदार

[a] **14.34** गुनाह [b] **15.3** बुरे-भले दोनों को [c] **15.4** शान्ति देने वाली [d] **15.9** चालचलन [e] **15.10** डाँट
[f] **15.11** नरक [g] **15.11** बर्बादी [h] **15.19** राजमार्ग की तरह

इन्सान खराई से जीता है। 22 बिना सलाह
मशविरा के योजनाएँ निराशा लाती हैं, लेकिन
तमाम सलाहकारों की मदद से वे पूरी होती
हैं। 23 सही जवाब देने और सही समय पर
कही हुयी बात से बड़ी खुशी होती है।
24 अक्लमन्द के लिए ज़िन्दगी का रास्ता
ऊपर की तरफ़ ले जाता है, ताकि वह नीचे
मृत्यु लोक से बचा रहे। 25 घमण्डी के घर को
प्रभु बर्बाद कर देंगे, लेकिन वह विधवा के
सिवानों को स्थिर करेंगे। 26 दुष्ट के विचार
प्रभु की दृष्टि में घिनौने हैं। लेकिन शुद्ध लोगों
की बातें[a] अच्छी लगती है। 27 जो गलत
फ़ायदे का लालची है वह अपने घर के लिए
मुसीबतें खड़ी कर देता है, लेकिन जो रिश्वत
से नफ़रत करता है, ज़िन्दा रहेगा। 28 उत्तर
देने से पहले धर्मी का मन, पहले अभ्यास[b]
करता है, लेकिन बुरे इन्सान का मुँह बुरी
बातें उगलता है। 29 प्रभु दुष्ट से दूर रहते हैं,
लेकिन धर्मी की प्रार्थना को वह सुनते हैं।
30 आँखों की रोशनी मन को खुश कर देती है,
और अच्छी खबर हड्डियों पर चर्बी चढ़ा देती
है। 31 जो व्यक्ति ध्यान से जीवन में सुधार की
बातें सुनता है, वह अक्लमन्द लोगों के बीच
रहता है। 32 जो सीखने से इन्कार करता है,
वह अपने प्राण को तुच्छ समझता है, लेकिन
जो सुधार की बात सुनता है वह समझ पाता
है। 33 प्रभु का डर बुद्धि की शुरूवात है और
इज्ज़त[c] से पहले दीनता आती है।

16 इन्सान मन ही मन योजनाएँ बना
सकता है, लेकिन उन्हें शब्दों में
कहने की योग्यता प्रभु ही से मिलती है।
2 अपनी निगाह में इन्सान को सभी रास्ते
बिना खोट के[d] दिखते हैं, लेकिन प्रभु मन
को जाँचते हैं। 3 अपने कामों को प्रभु की
इच्छानुसार करो और तुम्हारे सोच-विचार
मज़बूती पाएँगे। 4 प्रभु ने सब कुछ एक
मकसद् से बनाया है, यहाँ तक कि दुष्ट
का सज़ा पानी भी इस योजना के तहत है।
5 हर एक घमण्डी प्रभु की दृष्टि में घिनौना
है, उन्हें सज़ा ज़रूर मिलेगी। 6 विश्वसनीय
प्रेम और सच्चाई से दुष्टता ढाँक दी जाती है,
प्रभु के डर से इन्सान बुराई से बचता है।
7 जब एक इन्सान की जीवन शैली प्रभु को
पसंद आती है, तो वह उसके दुश्मनों तक
से उस का मेल करा देते हैं। 8 ईमानदारी
- सच्चाई के साथ थोड़े में जीवन निर्वाह,
अनुचित तरीकों से भारी भरकम आमदनी
से बेहतर है। 9 इन्सान अपनी योजनाएँ खुद
बनाता है, लेकिन प्रभु उसके कदमों को लेने
में मदद कर सकते हैं। 10 राजा के ओठों
से सही फैसला दिया जाना चाहिए। इन्साफ़
करते समय उसके मुँह से चूक नहीं होना
चाहिए। 11 सही बाँट और तराज़ू प्रभु के हैं,
झोले में रखे हुए सही बाँट उन्हीं के द्वारा
ठहराए हुए हैं। 12 राजाओं का दुष्टता करना
एक घिनौना काम है, इसलिए कि ईमानदारी
और सच्चाई से राजासन स्थिर किया जाता
है। 13 सच बोलने वाले ओठों से राजा खुश
हो जाता है, वह ऐसों ही से प्रेम करता है
जो सही बातें बोलता है। 14 राजा का गुस्सा
मौत को खबर देने वालों की तरह है, लेकिन
एक बुद्धिमान व्यक्ति उसको शान्त करता
है। 15 राजा के चेहरे की रोशनी जीवन है
और उसकी प्रसन्नता वसन्त ऋतु की बारिश
की तरह है। 16 सोने से ज़्यादा, बुद्धि हासिल
करना है और चाँदी से ज़्यादा, समझ प्राप्त
करना है। 17 सच्चे इन्सान का रास्ता बुराई से
दूर का होता है, जो उसकी रक्षा करता है
वह अपने जीवन को बचाता है। 18 बर्बादी

[a] **15.26** प्रभु को [b] **15.28** अध्ययन [c] **15.33** आदर, महिमा [d] **16.2** पवित्र

से पहले घमण्ड आता है और पतन से पहले
मन में अहंकार। 19 घमण्डियों के साथ लूट
का माल बाँटने के बजाए, सीधे सादे लोगों
के साथ नम्र मन के साथ रहना बेहतर है।
20 जो किसी मुद्दे को बुद्धिमानी से संभालता है
और जो प्रभु पर भरोसा रखता है वही सचमुच
में आशीषित है। 21 जिन के पास बुद्धि है वे
ही सही सही परख करने वाले कहे जाएँगे,
मीठे बोल-चाल में के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।
22 जिस के पास समझ है उसके पास जीवन
का सोता है, लेकिन बेवकूफ़ों को सलाह देना
बेवकूफ़ी है। 23 बुद्धिमान का मन उसके मुँह
को सिखाता है और उसके ओठों में शिक्षा
डालता है। 24 मधुर शब्द मधु के छत्ते की
तरह मन को मिठास देते हैं और हड्डियों में
ताकत। 25 बहुत से लोगों को उनकी राह
सही लगती है, लेकिन उसके आखिर में
मौत ही मिलती है। 26 मजदूर[a]की भूख उसके
पक्ष में है, क्योंकि वही उसे मेहनत के लिए
मजबूर करती है। 27 एक बुरा इन्सान बुराई
को खोदता है, उसके ओठ धधकती आग
की तरह हैं। 28 एक दुष्ट इन्सान झगड़े पैदा
करता है और कानाफूसी करने वाला गहरे
दोस्तों में फूट डाल देता है। 29 एक झगड़ालू
व्यक्ति दूसरों को फुसला कर गलत रास्तों
में ले चलता है। 30 जो आँखें मारता है, वह
बुरी योजनाएँ बनाता है और जो अपने ओठ
दबाता है वह योजना को पूरी तरह कर
डालता है। 31 पके बाल खूबसूरत ताज हैं,
लम्बी आयु वाले लोगों को यह मिलते हैं।
32 जो गुस्सा करने में धीमा है ताकतवर से
बढ़ कर है और जो अपने को काबू में रखता
है, वह शहर पर जीत हासिल करने वाले से
बढ़ कर है। 33 चिट्ठी डाली जाती है, परन्तु
उसका निकलना याहवे की ओर से होता है।

17 चैन के साथ रोटी का सूखा टुकड़ा
बेहतर है बजाए इसके कि घर में
दावतें उड़ें और झगड़े हों। 2 एक बुद्धिमान
नौकर उस बेटे पर शासन करेगा, जो शर्म
का कारण है, उसके भाईयों के साथ उसे
भी हिस्सा मिलेगा। 3 चाँदी के लिए खास
बर्तन और सोने के लिए भट्टी है लेकिन प्रभु
लोगों के मन को जाँचते हैं। 4 एक कुकर्मी
इन्सान झूठे ओठों पर विश्वास कर लेता है
और एक झूठा बदनामी करने वाले की सुनता
है। 5 जो गरीब का मज़ाक उड़ाता है, वह
उसके बनाने वाले की बेइज्ज़ती करता है
और जो दूसरे की मुसीबत में हँसता है, सज़ा
ज़रूर पाएगा। 6 नाती पोते, बुज़ुर्ग लोगों के
मुकुट हैं और माता-पिता, बच्चों की शान हैं।
7 बेवकूफ़ों को अच्छी बातें कहना सोहती
नहीं, वैसे ही राजकुमारों[b] को झूठी बातें
कहना 8 जो रिश्वत देता है, उसके लिए यह
जादुई पत्थर की तरह काम करती है, ऐसा
व्यक्ति जिधर जाता है, कामयाबी पाता है।
9 जो गुनाह को ढाँकता है, वह प्रेम को चाहता
है, लेकिन जो बात को दोहराता है वह गहरे
दोस्तों को भी अलग कर देता है। 10 एक
बुद्धिमान व्यक्ति के भीतर डाँट गहराई से
समा जाती है, बजाए मूर्ख पर सौ कोड़े पड़ने
पर। 11 एक दुष्ट इन्सान सिर्फ़ बलवा करना
चाहता है, इसलिए एक निर्दयी संदेशवाहक
उसके खिलाफ़ भेजा जाएगा। 12 बेवकूफ़ी
करते हुए बेवकूफ़ से मिलने के बजाए, बच्चा
दीनी हुयी रीछनी से मिलना है। 13 जो भलाई
के बदले बुरा करेगा, बुराई उसके घर से
कभी दूर नहीं होगी। 14 झगड़े की शुरूवात
पानी बह जाने की तरह है, इसलिए इसके
पहले कि झगड़ा शुरू हो, उसे छोड़ देना
अच्छा है। 15 दुष्ट को सही ठहराना और

[a] **16.26** परिश्रम [b] **17.7** प्रधानों

अच्छे इन्सान को सज़ा के लायक ठहराना
दोनों ही प्रभु की दृष्टि में घिनौने हैं। 16 बेवकूफ़
के हाथ में पैसे से क्या फ़ायदा, क्योंकि बुद्धि
पाने में उसकी दिलचस्पी नहीं? 17 एक दोस्त
हमेशा प्रेम करता रहेगा और भाई मुसीबत
के समय का साथी है। 18 बेसमझ इन्सान
शर्त लगाता है और अपने दोस्त की मौजूदगी
में जमानत लेता है। 19 जिसे झगड़ा करना
पसंद है, वह अपराध से प्रेम करता है। जो
बहुत बड़-बड़ करता है, वह अपनी बर्बादी
चाहता है। 20 जिस का मन टेढ़ा है, उस का
भला नहीं होता है। जिस की जीभ खराब है
वह मुसीबत में पड़ जाता है। 21 जो मूर्ख को
पैदा करता है, वह अपने दुख को बढ़ाता
है और मूर्ख के पिता को कोई खुशी नहीं
होती है। 22 एक प्रसन्न मन, अच्छी दवाई
की तरह होता है, लेकिन एक टूटी आत्मा
हड्डियों तक को सुखा देती है। 23 इन्साफ़ को
बदल डाले जाने के लिए दुष्ट इन्सान रिश्वत
लेता है। 24 जिस के पास समझ है, उसके
पास बुद्धि रहती है, लेकिन मूर्ख की आँखें
पृथ्वी के दूर देशों तक लगी रहती हैं। 25 एक
बेवकूफ़ बेटा पिता के दुख का कारण है, उसे
पैदा करने वाली माँ को भी उस से दुख होता
है। 26 सच्चे व्यक्ति[a] पर ज़ुर्माना लगाना और
प्रधानों को उनकी खराई के कारण पिटवाना
दोनों ही अच्छा नहीं है। 27 जो समझ-बूझ कर
बोलता है, वह ज्ञानी ठहरता है और समझदार
ही शान्त रहता है। 28 जब बेवकूफ़ खामोश
रहता है, उसे बुद्धिमान समझा जाता है और
जो अपने ओठों को बन्द रखता है उसे लोग
ज्ञानी समझते हैं।

18 अपनी मनमानी करने वाला व्यक्ति
ही अपने आपको दूसरों से अलग
कर लेता है, वह समझदारी की बातों को
तुच्छ जानता है। 2 बेवकूफ़ इन्सान का मन
समझ की बातों में नहीं लगता, वह सिर्फ़
अपने मन की बात उगलना चाहता है।
3 गलत करने[b] से लज्जा का सामना करना
पड़ता है, बेइज्ज़ती के साथ बदनामी आती
है। 4 मनुष्य के मुँह की बातें गहरे पानी की
तरह होती है और बुद्धि का सोता बहते झरने
की तरह होता है। 5 बुरे इन्सान की तरफ़दारी
करना और अच्छे इन्सान[c] का हक मारना
अच्छा नहीं है। 6 मूर्ख की बातों से वह झगड़ा
मोल लेता है और इसलिए वह पिटाई के
लायक ठहरता है। 7 मूर्ख की बातों से उसकी
बर्बादी है और उसके ओंठ उसके लिए फन्दा
बने जाते हैं। 8 कानाफूसी करने वाले के शब्द
स्वादिष्ट निवाले की तरह हैं, वे इन्सान की
ज़िन्दगी में गहराई में उतर जाते हैं। 9 जो
अपनी ज़िम्मेंदारी में ढिलाई करता है वह
बर्बादी लाने वाले बिगाड़ने वाले का भाई है।
10 प्रभु का नाम एक मज़बूत बुर्ज़ की तरह
है खरा इन्सान इसमें शरण लेता है और बच
जाता है। 11 एक अमीर आदमी की दौलत
मज़बूत शहर की तरह है, उसकी कल्पना में
वह एक ऊँची दीवार की तरह है। 12 बर्बादी
से पहले इन्सान घमण्डी हो जाता है, लेकिन
इज्ज़त मिलने से पहले नम्रता। 13 जो इन्सान
सुनने से पहले जवाब देता है, वह उसके
लिए बेवकूफ़ी और शर्म का कारण ठहरता
है। 14 बीमार देह को इन्सान की आत्मा झेल
सकती है, लेकिन निराश आत्मा को झेलना
मुश्किल है। 15 परखने वाला इन्सान समझ
हासिल करता है और बुद्धिमान व्यक्ति ज्ञान
का भूखा होता है। 16 भेंट[d] देने से दरवाज़े
खुल सकते हैं, इस से बड़े लोगों तक पहुँच
होती है। 17 मुकदमें में पहले दलील पेश करने

[a] **17.26** धर्मी जन [b] **18.3** दुष्टता [c] **18.5** धर्मी जन [d] **18.16** ईनाम

वाला सही जान पड़ता है, जब तक दूसरा आकर अपनी सफ़ाई नहीं देता है। 18 चिट्ठी उठाने से झगड़े बन्द होते हैं और ताकतवर विरोधियों के बीच का झगड़ा शान्त होता है। 19 एक मज़बूत शहर को जीत लेने से ज़्यादा मुश्किल काम है नाराज़ हुए दोस्त को मनाना, जिस तरह से राजमहल के दरवाज़े धातु की सीखचों के होते हैं वैसे ही झगड़ा दूरी पैदा करता है। 20 बुद्धिमानी से कहे गए शब्द अच्छे भोजन की तरह होते हैं, वह अपने ओठों के शब्दों से सन्तुष्ट होता है। 21 जीवन और मौत की ताकत जीभ में है और जो इसको इस्तेमाल करेंगे इसका फल पाएँगे। 22 जिसे पत्नी मिल जाती है, वह आनंद उठा सकता है, वह प्रभु का भलाई एक अनुग्रह[a] की शक्ल में पाता है। 23 एक गरीब आदमी गिड़गिड़ाता है लेकिन अमीर आदमी घमण्ड से जवाब देता है। 24 दोस्तों की बढ़ती से नुकसान हो सकता है, लेकिन एक ऐसा दोस्त भी है जो भाई से ज़्यादा नज़दीकी होता है।

19 जो गरीब खराई से जीवित है वह उस बेवकूफ़ से बेहतर है जो टेढ़ी बातें बोलता है। 2 बिना ज्ञान का जोश कोई फ़ायदे का नहीं, जल्दबाजी में गलतियाँ होती हैं। 3 बेवकूफ़ी की वजह से इन्सान की ज़िन्दगी में ज़्यादा तकलीफ़ें होती हैं और फिर वह प्रभु से नाराज़ होता है। 4 दौलत से दोस्त बढ़ जाते हैं लेकिन गरीब से उसके दोस्त किनारा कर लेते हैं। 5 एक झूठी गवाही देने वाला सज़ा से नहीं बचेगा और न ही झूठ बोलने वाला। 6 उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं और दान देने वाले व्यक्ति के सभी दोस्त बनना चाहते हैं। 7 जब गरीब के रिश्तेदार उस से दुश्मनी रखते हैं तो निश्चिय है कि उसके दोस्त उस से किनारा करेंगे। हालांकि वह उन से गिड़गिड़ाता है, उसकी कोई नहीं सुनता। 8 जो बुद्धि हासिल करता है, वह खुद से प्रेम करता है। जो समझ को बनाए रखता है, वह तरक्की करता है। 9 झूठी गवाही देने वाला सज़ा से नहीं बचेगा और जो झूठ उगलता है, बर्बाद हो जाएगा। 10 बेवकूफ़ इन्सान सुख के लायक नहीं है। जैसे एक नौकर को मालिक के ऊपर राज्य करना नहीं फबता। 11 एक व्यक्ति की बुद्धि उसे गुस्से में धीमा बनाती है, अपराध को भुला देना उसकी शान है। 12 एक राजा का गुस्सा शेर की गर्जना की तरह है, लेकिन उसकी कृपा घास पर गिरी ओस की तरह है। 13 बेवकूफ़ बेटा पिताजी के लिए मुसीबत ठहरता है और पत्नी के झगड़े-रगड़े हमेशा टपकने वाली छत की तरह हैं। 14 घर और दौलत माता-पिता से मिलते हैं, लेकिन समझदार पत्नी प्रभु से मिलती है। 15 आलस्य से गहरी नींद आ जाती है और आलसी इन्सान भूखा रह जाएगा। 16 जो आज्ञा को मानता है वह अपनी जीवन की रक्षा करता है, लेकिन जो अपने चालचलन के बारे में बेफिक्र रहता है, वह बर्बाद हो जाता है। 17 जो गरीब पर दया करता है वह प्रभु को उधार देता है और वह अपने इस काम का नतीजा पाएगा। 18 जब तक आशा है, अपने बच्चों का अनुशासन करो, नहीं तो तुम उनका जीवन बर्बाद कर डालोगे। 19 जो बड़ा गुस्सैल है, उसे सज़ा उठाने दो, क्योंकि अगर तुम उसे बचाओ तो बार-बार बचाना पड़ेगा। 20 सलाह को सुन लो और अनुशासन सीखो, ताकि अपनी ज़िन्दगी भर बुद्धिमान बने रहो। 21 इन्सान अपने मन में बहुत-सी

[a] **18.22** ईनाम

योजनाएँ बनाता है, लेकिन प्रभु की सलाह ही
कामयाबी दे सकती है। 22 प्रेम-निष्ठा व्यक्ति
के लिए गहने की तरह है, बेईमानी[a] से बेहतर
गरीबी है। 23 प्रभु का डर मानने से व्यक्ति
की उम्र बढ़ती है और वह सन्तुष्ट रहेगा।
कोई भी विपत्ति उसके आशीषित भविष्य को
बिगाड़ न सकेगी। 24 एक आलसी इन्सान
प्याले में हाथ तो डालता है, लेकिन अपने
मुँह तक नहीं ले जाता है। 25 ठट्ठा करने
वाले को सज़ा दो और भोला अच्छी बात
सीखेगा। अगर बुद्धिमान को सुधारोगे, तो
वह ज़्यादा बुद्धिमान हो जाएगा। 26 जो बच्चे
अपने पिताजी के साथ बुरा बर्ताव करते हैं
या अपनी माँ को निकाल देते हैं उनके लिए
यह शर्मनाक बात है। 27 मेरे बेटे[b] यदि तुम
मेरी सलाह सुनना बन्द कर दोगे, तो तुम
ज्ञान को पीठ दिखाओगे। 28 एक भ्रष्ट गवाह
इन्साफ़ की खिल्ली उड़ाता है, दुष्ट इन्सान का
मुँह बुराई निगल जाता है। 29 ठट्ठा करने वालों
के लिए दण्ड है और मूर्खों की पीठ पिटाई[c]
के लिए बनी है।

20 शराब[d] लोगों को मूर्ख बनाती है
और झगड़ा करवाती हैं। जो लोग
मदिरा से बहकते है, वे बुद्धिमान नहीं हो
सकते। 2 राजा का गुस्सा शेर की दहाड़ की
तरह है, उसके गुस्से को भड़काना अपने
जीवन को खतरे में डालना है। 3 झगड़े से
बचना आदर का निशान है, सिर्फ बेवकूफ़
लोग ही झगड़ा करते हैं। 4 जो मौसम आने
पर हल जोतने में सुस्ती करता है, फ़सल
काटे जाने के समय उसके हाथ कुछ नहीं
लगता। 5 हालांकि अच्छी सलाह मन के
भीतर गहराई में रहती है, एक समझदार
इन्सान इसे बाहर निकालता है। 6 बहुत से
लोग कहते हैं कि वे सच्चे दोस्त हैं, लेकिन
पूरी तरह से विश्वसनीय दोस्त किसे मिल
सकता है? 7 एक खरा इन्सान ईमानदारी की
ज़िन्दगी जीता है, उसके वे बच्चे आशीषित हैं,
जो अपने पिता की राह पर चलते हैं। 8 जब
एक राजा न्यायासन पर बैठता है, वह सारे
गलत और सही सबूतों की जाँच करता है।
9 कौन कह सकता है, “मैंने अपना मन साफ़
रखा है और मैं अपराध से आज़ाद हूँ। 10 झूठे
बाँट और तरह-तरह के झूठे मापदण्ड- ये
सभी प्रभु की निगाह में घिनौने हैं। 11 अपने
कामों से एक नवजवान पहचाना जाता है,
कि वे शुद्ध और सही हैं या नहीं। 12 सुनने के
कान और देखने वाली आँखें दोनों ही प्रभु
की तरफ़ से ईनाम हैं। 13 यदि तुम नींद से प्रेम
रखोगे, गरीब हो जाओगे। अपनी आँखें खुली
रखो और खाने के लिए बहुत कुछ होगा।
14 खरीदने के समय ग्राहक कहता है, चीज
अच्छी नहीं हैं, लेकिन चले जाने पर बड़ाई
करता है। 15 सोना और बहुत से मूँगे तो हैं,
लेकिन ज्ञान की बातें कीमती मणि ठहरती
हैं। 16 जो अनजाने इन्सान की गारण्टी लेता
है उस का कपड़ा, और जो पराए की जमानत
ले उस से बंधक की वस्तु ले रख। 17 झूठ
फ़रेब से प्राप्त रोटी स्वादिष्ट तो लगती है,
लेकिन बाद में उस का मुँह कंकड़-पत्थर से
भर जाएगा। 18 सलाह मशविरा से योजनाएँ
मज़बूत होती हैं इसलिए सलाह से युद्ध करो।
19 जो कानाफूसी करता फिरता है, वह गुप्त
बातें प्रगट कर देता है, इसलिए ऐसे इन्सान
का साथ मत करना, जो हमेशा बक-बक
करता रहता है। 20 जो अपने पिता और माता
को कोसता है उस का दीपक घोर अन्धेरे
में बुझ जाएगा। 21 आसानी[e] दौलत आखिर
तक फ़ायदेमंद नहीं रहेगी। 22 मत कहना, “मैं

[a] **1.22** झूठ [b] **19.27** बच्चो [c] **19.29** कोड़े [d] **20.1** दाखमधु [e] **20.21** समय से पहले बेईमानी से मिली

बदला लूँगा" प्रभु का इंतजार करना, वह देख
लेंगे कि क्या करना है या तुम्हारा नुकसान
होने से बचा लेंगे[a]। 23 कम वज़न वाले बाँटों
से प्रभु को नफ़रत है और छल का तराज़ू
अच्छा नहीं है। 24 प्रभु हमारे कदमों को दिशा
देते हैं, इसलिए अपनी ज़िन्दगी के सफ़र में
परेशान क्यों होना? 25 उतावली में शपथ लेना
फन्दा है, बाद में तुम सोचोगे कि मैंने क्यों
शपथ ली। 26 एक बुद्धिमान राजा दुष्टों को
गेहूँ की तरह फटकता है, उसके बाद उन
पर दाँवने का पहिया चलवाता है। 27 मनुष्य
की आत्मा प्रभु का दीपक है, जो भीतर
की सभी बातों को परखता है। 28 कृपा और
सच्चाई राजा को बनाए रखती हैं और राजासन
कृपा ही से बना रहता है। 29 नवजवान की
शान उस का बल है और बुज़ुर्ग लोगों की
खूबसूरती उनके सफ़ेद बाल। 30 शारीरिक
सज़ा बुराई को निकालती है, इस से भीतर
या मन का सुधार भी होता है।

21 राजा का मन पानी के सोते की तरह
है, जिसे प्रभु दिशा दे सकते हैं, जहाँ
वह चाहें, उसे मोड़ सकते हैं। 2 मनुष्य को
उसके तौर तरीके उसकी निगाह में सही
लगते हैं, लेकिन प्रभु उनके मनों को जाँचते
हैं। 3 बलिदान से बढ़ कर ईमानदारी और
इन्साफ़ की ज़िन्दगी प्रभु को पसंद है। 4 चढ़ी
आँखें, घमण्डी मन और दुष्टों की खेती[b] सब
ही गुनाह हैं। 5 कामकाजी की योजनाओं से
फ़ायदा होता है, लेकिन जो उतावली करता
है, गरीब बन जाता है। 6 झूठ बोल कर
दौलत इकट्ठा करना उड़ जाने वाली भाप है
मौत की तलाश करने वाले ही ऐसा करते
हैं। 7 दुष्ट लोगों की हिंसा उन्हें ही बर्बाद
कर डालेगी, इसलिए कि वे न्याय से जीना
नहीं चाहते। 8 दोषी व्यक्ति की राह बहुत
टेढ़ी-मेंढ़ी होती है, लेकिन पवित्र[c] व्यक्ति का
रास्ता सीधा-साधा होता है। 9 छत के कोने
में रहना बेहतर है बजाए इसके कि घर में
झगड़ालू पत्नी के साथ रहा जाए। 10 बुरे
व्यक्ति को बुराई की भूख रहती है, उसकी
निगाह में दूसरों की भलाई की कोई जगह
नहीं है। 11 जब एक ठट्ठा करने वाले को सज़ा
मिलती है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है।
जब एक बुद्धिमान को सिखाया जाता है, तब
उसे समझ मिलती है। 12 इन्साफ़ करने वाले
प्रभु दुष्ट के ऊपर नज़र रखते हैं। उसी के
मुताबिक वह दुष्ट पर दण्ड लाते हैं। 13 जो
गरीब की गुहार सुन कर अनसुनी कर देता
है, जब वह गुहार लगाएगा, उसकी सुनी
नहीं जाएगी। 14 गुप्त रूप से दिया ईनाम गुस्से
को शान्त कर देता है और छिपा कर दी
गई घूस भयंकर गुस्से को ठण्डा कर देता
है। 15 न्याय दिए जाने पर खरे व्यक्ति को
खुशी मिलती है, लेकिन आतंक से दुष्ट खुश
होते हैं। 16 जो बुद्धिमानी की राह से भटक
जाता है, वह मुर्दों की जमायत का हिस्सा
बन जाता है। 17 जो मज़ा करना ही पसंद
करते हैं, गरीब हो जाते हैं, जो दाखमधु[d]
में और अनाप-शनाप में खर्च करेंगे, कभी
संपन्न नहीं हो पाएँगे। 18 दुष्ट जो जाल धर्मी
के लिए फैलाता है, उसी का वह खुद शिकार
हो जाता है, सच्चे लोगों की जगह दुष्टों को
सज़ा मिलती है और 19 देश द्रोहियों को
ईमानदारों की जगह झगड़ालू पत्नी के साथ
रहने के बजाए जंगल में रहना ज़्यादा बेहतर
है। 20 बुद्धिमान के घर में अच्छी चीजें होती हैं
लेकिन बेवकूफ़ आदमी सब कुछ उड़ा देता
है। 21 जो सही करता है प्रेम में विश्वसनीय
रहता है, वह जीवन, भरपूरी और इज्ज़त

[a] **20.22** छुड़ा लेंगे [b] **21.4** बुरे काम [c] **21.8** शुद्ध [d] **21.17** शराब

पाता है। 22 बुद्धिमान इन्सान ताकतवर पर
हमला बोलता है और उस किले को ढा देता
है जिस पर उसे भरोसा होता है। 23 जो अपने
मुँह और अपनी जीभ की रक्षा करता है,
अपने जीवन को तमाम परेशानियों[a] से बचा
लेता है। 24 ठट्ठा करने वाले घमण्डी और
अहंकारी होते हैं, वे बड़ी-बड़ी डींगे मारते हैं।
25 तमाम इच्छाओं के होने के बावजूद, सुस्त
बर्बाद हो जाएगा, क्योंकि वह कुछ करना
नहीं चाहता। 26 पूरे दिन वह लालच करता
है, लेकिन प्रभु का प्रेमी देता रहता है और
कंजूसी नहीं करता है। 27 दुष्ट की कुर्बानी
घिनौनी है, और ज़्यादा तब, जब वह बुरे
मन से लाता है। 28 एक झूठा गवाह बर्बाद
हो जाएगा, लेकिन जो सही सही कहता
है, उसे आखिर तक बोलने दिया जाएगा।
29 एक दुष्ट मनुष्य बड़ी बहादुरी दिखाता है,
लेकिन सज्जन सोच-समझ कर आगे बढ़ता
है। 30 सफ़लता के लिए ज़रूरी है कि सारी
बुद्धिमानी, समझदारी और सलाह प्रभु की
इच्छा के अनुरूप हो। 31 युद्ध में तैयारी तो
की जाती है लेकिन जीत तो प्रभु देते हैं।

22 ढेर सारी दौलत की जगह पर यदि
अच्छा नाम कमाया जाए, तो यह
ज़्यादा बेहतर है, लोगों द्वारा चाहा जाना चाँदी
और सोने से बढ़ कर है। 2 सभी जगह अमीर
और गरीब पाए जाते हैं, वे दोनों ही प्रभु
की रचना हैं। 3 खतरा देखते ही एक चालाक
इन्सान अपने आप को छिपा लेता है, लेकिन
कम समझ वाला[b] आगे चलता जाता है और
मुसीबत में फँस जाता है। 4 दीनता और प्रभु
के भय में जीने से सम्मान, जीवन और दौलत
मिलते हैं। 5 दुष्ट की राह में काँटे और फन्दे
दोनों ही होते हैं, लेकिन जो अपने आपको
उन से बचाता है, वह उन से दूर ही रहता
है। 6 जिस रास्ते में बच्चे को चलना चाहिए
उसके लिए उसे अलग करें, तब बड़ा होने
पर भी वह उस रास्ते से हटेगा नहीं। 7 अमीर,
गरीब पर शासन करता है, और उधार लेने
वाला, उधार देने वाले का गुलाम हो जाता है।
8 जो मनुष्य बुराई को बोता है, वह मुसीबतों
की फ़सल काटेगा और उसके आतंक[c] का
शासन खत्म हो जाएगा। 9 एक दयालु व्यक्ति
भलाई देखेगा, क्योंकि वह अपने खाने में से
गरीब को भी देता है। 10 ठट्ठा करने वाले को
निकाल दो और झगड़ा रूक जाएगा, झगड़े
और बेइज्ज़ती गायब हो जाएँगे। 11 जिस का
मन शुद्ध है और जुबान में कोमलता है, राजा
उस का दोस्त बन जाएगा। 12 जिस के पास
ज्ञान है, प्रभु उसको बनाए रखते[d] हैं, लेकिन
बुरे इन्सान की योजनाओं को वह बर्बाद
कर डालते हैं। 13 आलसी कहता है, "बाहर
एक शेर है और वह मुझे मार डालेगा।"
14 एक व्यभिचारिन का मुँह गहरा गड्ढा
है, जिस से प्रभु नाराज[e] हैं, वह इसमें गिर
पड़ेगा। 15 बच्चा स्वभाविक रूप से बेवकूफ़ी
और लापरवाही करता है, लेकिन शारीरिक
अनुशासन से उसमें सुधार होता है। 16 जो
गरीब को लूटकर अपनी दौलत बढ़ाता है
और जो अमीर को दान देता है, गरीब हो
जाएगा। 17 बुद्धिमान की सुनने के लिए अपने
कानों को खुला रखो और मेरी सलाह मानने
के लिए अपने मन को 18 यदि तुम उसे अपने
मन में रखो और वे तुम्हारे ओठों से हमेशा
निकला करें तो यह मन को खुशी देगी। 19 मैंने
आज तुम्हें, हाँ, तुम्हें ही इसलिए सिखाया है,
कि तुम्हारा भरोसा प्रभु पर हो। 20 क्या मैंने
तुम्हारे लिए उत्तम बातें, सलाह और ज्ञान की
बातें नहीं लिखी; 21 कि तुम सच्चाई की बातों

[a] **21.23** विपत्तियों [b] **22.3** भोला [c] **22.8** रोष [d] **22.12** रक्षा करते [e] **22.14** क्रोधित

से असलियत जान कर उसे सही जवाब दे
सको, जिस ने तुम्हें भेजा? 22 किसी गरीब
को इसलिए मत लूटना कि वह गरीब है,
न ही किसी दुखी को कचहरी में पीसना।
23 क्योंकि प्रभु उस का मुकदमा लड़ेंगे और
जो गरीबों को लूटते हैं उनकी जान ले लेंगे।
24 गुस्सैल इन्सान का साथ मत करना और
न ही जल्दी गुस्सा करने वाले के साथ
चलना। 25 कहीं ऐसा न हो कि तुम उस का
रवैया अपना लो, और तुम खुद फँदे में फँस
जाओ। 26 तुम उन लोगों की तरह न बनना
जो हाथ पर हाथ मारते हैं और दूसरों के कर्ज़
के जमानती बनते हैं। 27 अगर तुम्हारे पास
चुकाने के लिए कुछ न हो तो कोई तुम्हारा
बिस्तर क्यों ले ले? 28 जो सीमा तुम्हारे बुज़ुर्गों
ने बान्धी हो, उसे मत बढ़ाना। 29 क्या तुम
किसी ऐसे इन्सान को देखते हो, जो अपने
काम में विशेषज्ञ है? वह तो राजाओं[a] के
सामने तक जाएगा, साधारण लोगों के सामने
नहीं।

23 जब तुम किसी रईस[b] के साथ खाना
खाने बैठो, तब तुम ख्याल रखना
कि तुम्हारे साथ कौन खाना खा रहा है। 2 यदि
तुम ज़्यादा खाना खाने के आदी हो, तो कम
खा कर ही उठ जाना। 3 उसके तमाम तरह
के स्वादिष्ट खाने की चाह मत रखना, क्योंकि
वह धोखे का खाना है। 4 अमीर बनने के लिए
मेहनत मत करना। अपनी समझ पर भरोसा
रखना छोड़ दो। 5 जब तुम उस पर निगाह
करो तो क्या वह गायब नहीं हो जाएगा?
6 क्योंकि दौलत तो निश्चिय पंख लगा कर
उकाब चिड़िया की तरह आकाश की तरफ़
उड़ जाती है। 7 जिसे तुम को खिलाने पर मन
में कष्ट होता हो, उसके दिए हुए भोजन को
मत खाना। क्योंकि वह ऐसा इन्सान हैं जो
मन में हिसाब लगाता रहता है। वह तुम से
कहता तो है खाओ, पीओ, लेकिन ऐसा वह
पूरे मन से नहीं कहता है। 8 जो निवाला तुमने
खाया है, उसे भी तुम्हें उगलना पड़ेगा और
तुम्हारी मीठी बातें बेकार ठहरेंगी। 9 बेवकूफ़
के सामने बात मत करना नहीं तो वह तुम्हारी
बुद्धि की बातों को तुच्छ समझेगा। 10 पुरानी
सरहदों को मत बदलना और न अनाथों के
खेतों पर कब्ज़ा करना। 11 क्योंकि उन लोगों
की मदद करने वाले, छुड़ाने वाले शक्तिशाली
हैं, वह तुम्हारे खिलाफ़ उनके पक्ष में लड़ेंगे।
12 अपना मन[c] सीखने के लिए और अपना
कान ज्ञान की बातें सुनने के लिए तैयार
रखो। 13 अपनी सन्तान की डाँट-डपट से
मत कतराना, क्योंकि अगर तुम उसको छड़ी
से मारो, तो वह मर नहीं जाएगा। 14 तुम
उसे छड़ी लगा कर अधोलोक जाने से बचा
लोगे। 15 हे मेरे बेटे, यदि तुम बुद्धिमान बनो,
तो मुझे ही खुशी मिलेगी। 16 जब तुम सीधी
बातें बोलो, तब मेरा मन खुश होगा। 17 तुम
अपराधियों के प्रति जलन मत रखना, दिन
भर प्रभु से डरते रहना। 18 क्योंकि आखिर में
इसका नतीजा मिलेगा और तुम्हारी उम्मीद
बनी रहेगी। 19 हे मेरे बेटे, तुम मेरी सुन
कर अक्लमन्द बन जाओ और अपना मन
सही रास्ते पर लगाओ। 20 दाखमधु[d] पीने
वालों का संग मत करना न मांसाहारी लोगों
के साथ ज़्यादा दोस्ती करना। 21 क्योंकि
पियक्कड़ और पेटू अपना हिस्सा खो देते
हैं और उनकी नींद उन्हें चिथड़े पहनाएगी।
22 पिता की, जिन्होंने तुम्हें पैदा किया है,
सुनना और जब तुम्हारी माताजी बुज़ुर्ग हो
जाएँ, तब भी उन से नफ़रत मत करना।
23 सच्चाई को बेच मत डालना बल्कि मोल

[a] **22.29** प्रधानों [b] **23.1** हाकिम, शासक [c] **23.12** हृदय [d] **23.20** शराब

लेना, बुद्धि, सीख और समझ इन तीनों को
खरीद लेना। 24 ईमानदार और खरे व्यक्ति के
पिताजी उस से बहुत खुश होते हैं, और जिस
का बेटा अक्लमन्द होता है उसे खुशी मिलती
है। 25 तुम्हारे कारण तुम्हारे माता-पिता खुश
हों और तुम्हारी माताजी आनन्दित हों। 26 हे
मेरे बेटे, अपना मन मेरी तरफ़ लगाओ और
तुम्हारी निगाह मेरे चालचलन पर लगी रहे।
27 वेश्या गहरा गड्ढा ठहरती है और पराई
महिला सकरे कुएँ की तरह है। 28 वह डाकू
की तरह घात लगाती है और बहुत से लोगों
को विश्वासघाती बना देती है। 29 मुसीबत[a]
में कौन पड़ा है? परेशानियों[b] से कौन घिरा
है? कौन बक-बक करता है? बिना वजह
के ज़ख्म किस के हैं? किसकी आँखें लाल
रहती हैं? 30 उनकी जो देर तक शराब पीते है
और जो मसाला मिली हुयी मदिरा की तलाश
में रहते हैं। 31 जब शराब लाल दिखाई देती
है, और प्याले में खूबसूरत दिखती है। जब
वह प्यार के साथ उण्डेली जाती है, तब उसे
मत देखना 32 क्योंकि आखिर में वह साँप की
तरह डसती है और करैत की तरह काटती
है। 33 तुम्हारी आँखें अजीब चीजें देखेंगी और
मुँह से फ़ालतू बातें निकलेंगी। 34 तुम ऐसे
इन्सान की तरह होगे जो समुद्र के बीच पड़ा
हो, या उसकी तरह जो मस्तूल के सिरे पर
लेटा हो। 35 तुम कहोगे, “उन लोगों ने मुझे
मारा, लेकिन मुझे चोट नहीं लगी” उन्होंने
पीटा, लेकिन मुझे महसूस तक नहीं हुआ।
मैं फिर कब होश में आऊँगा, ताकि और पी
सकूँ।

24 बुरे लोगों के बारे में ईर्ष्या मत
करना। और न उनकी दोस्ती की
चाहत रखना। 2 क्योंकि वे झगड़ा-फ़साद की
योजना बनाते है उनके मुँह से दुष्टता की
बातें निकलती हैं। 3 अक्ल से घर बनाया
जाता है और समझ द्वारा वह स्थिर होता
है। 4 ज्ञान के ज़रिए कमरे सब तरह की
मनोहर चीजों से भर जाते हैं। 5 अक्लमन्द
इन्सान ताकतवर होता है और ज्ञानी ताकत
पर ताकत बढ़ाता है। 6 इसलिए जब तुम युद्ध
करो, तब योजनाबद्ध तरीके से करना, जीत
ज़्यादा सलाहकारों की मदद से मिलती है।
7 बुद्धि इतनी ऊँचाई पर है कि बेवकूफ़ उसे
हासिल नहीं कर सकता। 8 जो सोच-विचार
करके बुराई करता है, उसको लोग बुरा
कहते हैं। 9 बेवकूफ़ी का विचार भी गुनाह
है, और ठट्ठा करने वाले से लोग नफ़रत
करते हैं 10 अगर तुम विपत्ति[c] के वक्त हिम्मत
छोड़ दो, तो तुम्हारी ताकत बहुत कम है।
11 जो लोग मार डाले जाने के लिए घसीटे
जा रहे हैं उनको छुड़ाओ, और जो घात किए
जाने पर हैं, उन्हें पकड़वाओ मत। 12 अगर
तुम कहो, कि देखो इसे मैं जानता नहीं था,
तो क्या मन को परखने वाले इसे समझते
नहीं? क्या तुम्हारी जान के रखवाले इसे नहीं
जानते, और क्या वह हर एक इन्सान को
उसके काम के हिसाब से न देंगे। 13 हे मेरे
बेटे तुम शहद खाओ, क्योंकि वह अच्छा है,
और शहद का छत्ता भी, क्योंकि वह तुम्हारे
मुँह में मीठा लगेगा। 14 इसी तरह बुद्धि भी
तुम्हें वैसी ही मीठी लगेगी, अगर तुम उसे
पा जाओ, तो आखिर में उस का नतीजा भी
मिलेगा और तुम्हारी उम्मीद टूटेगी नहीं। 15 हे
दुष्ट, तुम अच्छे आदमी के घर को बर्बाद
करने के लिए ताक में न रहो, 16 क्योंकि प्रभु
का जन चाहे सात बार[d] गिरे तौभी खड़ा हो
उठता है, लेकिन दुष्ट लोग मुसीबत में गिर
कर पड़े ही रहते हैं। 17 जब तुम्हारा दुश्मन

[a] **23.29** विपत्तियों [b] **23.29** दुखों [c] **2.10** मुसीबत [d] **24.16** कितनी ही बार

नाकामयाब हो जाए तब तुम खुश न होना,
और जब वह ठोकर खाए, तब तुम्हारा मन
मगन न हो। 18 कहीं ऐसा न हो कि प्रभु यह
देख कर नाराज हों और अपना गुस्सा उस
पर से हटा लें। 19 कुकर्मियों की वजह से
मत कुढ़ो, दुष्ट लोगों की वजह से मत जलो,
20 क्योंकि बुरे इन्सान को आखिर में कुछ
हासिल नहीं होगा, दुष्टों का दीपक बुझा दिया
जाएगा। 21 हे मेरे बेटे प्रभु और राजा दोनों
से डरना, बलवा करने वालों के साथ मत
मिलना। 22 क्योंकि उन पर मुसीबत अचानक
आ पड़ेगी और दोनों की तरफ़ से आने वाली
मुसीबत को कौन जानता है? 23 बुद्धिमानों
के शब्द यह भी हैं: इन्साफ़ करते समय,
तरफ़दारी बिल्कुल ठीक नहीं है। 24 जो दुष्ट
से कहता है कि तुम बेगुनाह हो उसको हर
समाज के लोग शाप देते हैं, और देश-देश के
लोग धमकी देते हैं। 25 लेकिन जो लोग दुष्ट
को डाँटते[a] हैं उनका भला होता है, और उत्तम
से उत्तम आशीर्वाद उन पर आते हैं। 26 जो
सीधा[b] जवाब देता है वह होठों को चूमता
है। 27 अपना बाहर का काम-काज ठीक
से करना और खेत का काम संभाल लेना,
उसके बाद खुद का घर बनाना। 28 अपने
पड़ोसी के खिलाफ़ बेकार में गवाही मत देना
और न उसको फुसलाना 29 ऐसा मत कहो,
“जैसा उसने मेरे साथ किया, वैसे ही मैं भी
करूँगा, और उसको उसके काम के अनुसार
बदला दूँगा।” 30 मैं आलसी के खेत के पास
से और निर्बुद्धि इन्सान के अंगूर के बगीचे के
पास से होकर जा रहा था 31 मैंने वहाँ कंटीले
पेड़ों को बढ़ते हुए देखा, वह ज़मीन बिच्छू
पेड़ों से ढँक गयी थी, उसकी पत्थर की मुंडेर
गिर पड़ी थी 32 तब मैंने देखा और ध्यान से
सोचा हाँ, मैंने देख कर सीख हासिल की।
33 थोड़ी और नींद, एक झपकी और जरा सी
देर हाथ पर हाथ रख कर और लेटे रहना,
34 तब तुम्हारी गरीबी डाकू की तरह और
तुम्हारी कमी हथियार बन्द मनुष्य की तरह
आ पड़ेगी।

25 सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं,
जिन्हें यहूदा के राजा हिजकिय्याह
के लोगों ने तैयार किया था। 2 प्रभु की
महिमा किसी बात को गुप्त रखने में है,
लेकिन राजाओं की महिमा छिपी बात को
पता लगाने में है। 3 स्वर्ग की ऊँचाई, पृथ्वी
की गहराई और राजा[c] का मन, इन तीनों
की सीमा ही नहीं 4 चाँदी में मिली गंदगी
को निकाल देने से वह सुनार के काम
की होती है। 5 राजा के सामने से दुष्टों को
दूर कर देने से उसकी गद्दी ईमानदारी की
वजह से बनी रहेगी। 6 राजा[d] के सामने
डींग न मारना और बड़े लोगों की जगह में
खड़े न हो जाना। 7 क्योंकि जिस प्रधान से
तुमने मुलाकात की हो, उसके सामने तुम्हारी
बेइज़्ज़ती न हो, या तुम से यह कहा जाए,
“आगे बढ़ कर बैठो।” 8 झगड़ा[e] करने में
जल्दी मत करना नहीं तो आखिर में जब
तुम्हारा पड़ोसी तुम्हारी बेइज़्ज़ती करेगा, तब
तुम क्या करोगे? 9 अपने पड़ोसी के साथ
अकेले में बातचीत करना और पराए की
बात मत खोलना 10 ऐसा न हो कि सुनने
वाला तुम्हारी भी बुराई करे और तुम्हारी
बुराई बनी रहे। 11 जैसे चाँदी को टोकरियों
में सोने के सेब हों, वैसी ही ठीक समय पर
कही गयी बात होती है। 12 जैसे सोने का नथ
और कुन्दन का जेवर अच्छा लगता है, वैसे
ही मानने वाले के कान में अक्लमन्द की
डाँट भी अच्छी लगती है। 13 जैसे कटनी के

[a] 24.25 दण्ड देते [b] 24.26 सही [c] 25.3 प्रधान [d] 25.6 प्रधान [e] 25.8 मुकद्दमा

समय बर्फ़ की ठंडक वैसे ही विश्वासयोग्य
संदेशवाहक से भी, भेजने वालों का जी
ठण्डा होता है। 14 जैसे बादल और हवा
बिना बारिश फ़ायदेमंद नहीं होते है, वैसे
ही झूठ-मूठ दान देने वाला का डींगे मारना
होता है। 15 सब्र रखने से एक हुकूमत करने
वाले को मजबूर किया जा सकता है, एक
मीठी[a] जुबान हड्डी तक को तोड़ डालती है।
16 क्या तुम्हें शहद मिला? उतना ही खाना
जितना तुम्हें ज़रूरत है, ताकि तुम उस से
उकता कर उल्टी न कर दो 17 पड़ोसी के
घर बार-बार मत जाना, कहीं वह तुम से
थक कर नफ़रत न करने लगे 18 एक मनुष्य
जो अपने पड़ोसी के खिलाफ़ गवाही देता
है, वह हथौड़े, तलवार और पैने तीर की
तरह है। 19 मुसीबत के समय विश्वासघाती
का भरोसा टूटे हुए दाँत या उखड़े पाँव की
तरह है। 20 जैसे जाड़े के मौसम में किसी के
कपड़े उतारना या सज्जी पर सिरका डालना
होता है, वैसा ही उदास मन वाले के सामने
गीत गाना होता है। 21 अगर तुम्हारा दुश्मन
भूखा हो तो उसे खाना खिलाना यदि वह
प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना 22 ऐसा करने
से तुम उसके सिर पर अंगारे डालोगे और
प्रभु तुम्हें इसका बदला देंगे। 23 जैसे उत्तरी
हवा बरसात लाती है वैसे ही चुगली करने
से मुँह पर गुस्सा छा जाता है। 24 लंबे चौड़े
घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से, छत
के कोने पर रहना उत्तम है 25 जैसा थके मांदे
के लिए ठण्डा पानी होता है, वैसा ही दूर
देश से आया हुआ अच्छा समाचार भी होता
है। 26 जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है, वह
गंदले सोते और बिगड़े हुए तालाब की तरह
है 27 बहुत शहद खाना अच्छा नहीं और न
अपना सम्मान खोजना किसी मतलब का है।
28 जिस मनुष्य की आत्मा[b] उसके वश में नहीं
है, वह उस बर्बाद शहर की तरह है, जिस की
दीवारें ढह गयी हों।

26 जैसा गर्मियों के दिनों में बर्फ़ का
और कटनी के समय बरसात का
होना, वैसा ही बेवकूफ़ के लिए महिमा भी
ठीक नहीं होती है। 2 जैसे गौरैया, फुदकती
फिरती और अबाबील[c] उड़ते उड़ते नहीं
बैठती है, वैसे ही बिना कारण दिया गया शाप
भी नहीं ठहरता। 3 घोड़े के लिए चाबुक, गधे
के लिए लगाम और मूर्खों की पीठ के लिए
छड़ी है। जो मूर्ख के हाथ से खबर भेजता
है, वह मानो अपने पाँव पर कुल्हाड़ा मारता
और ज़हर पीता है। 4 बेवकूफ़ को उसकी
बेवकूफ़ी के अनुसार जवाब न देना, ऐसा न
हो कि तुम भी उसी की तरह ठहरो। 5 मूर्ख को
उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर देना, कहीं
ऐसा न हो कि तुम भी उसी की तरह ठहरो।
6 जो बेवकूफ के हाथ से खबर भेजता है,
वह एक तरह से अपने पांव पर कुल्हाड़ी
मारता है। 7 जैसे लंगड़े व्यक्ति के पैर लटकते
हैं, वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन होता
है। 8 जैसे गोफ़न में पत्थर बान्धना, वैसे
ही मूर्ख को आदर देना है। 9 जैसे पियक्कड़
के हाथ में काँटे का चुभना, वैसे ही मूर्खों
के मुँह में नीतिवचन 10 जिस तरह से एक
तीरन्दाज़ जो बिना किसी कारण सब को
घायल करता हो, वैसा ही वह व्यक्ति है जो
मूर्खों और राहगीरों को मज़दूरी पर लगाता
है। 11 जिस तरह एक कुत्ता अपनी उल्टी को
चाटता है, उसी तरह मूर्ख अपनी मूर्खता को
दोहराता है। 12 क्या स्वयं को अपनी दृष्टि
में बुद्धिमान समझने वाला व्यक्ति तुमने देखा
है? उस से ज़्यादा तो मूर्ख के लिए आशा है।

[a] **25.15** कोमल [b] **25.28** मन [c] **26.2** सूपाबेनी

13 आलसी बहाना बनाता है, “चौक पर शेर
बैठा हुआ है, सड़क पर शेर है।” 14 जिस
तरह से दरवाजा अपनी चूलों पर घूमता है,
ठीक वैसे ही सुस्त इन्सान बिस्तर पर करवटें
बदलता है। 15 आलसी[a] व्यक्ति अपने हाथ
थाली में डालता तो है, लेकिन वापस मुँह
तक नहीं ले जा पाता है। 16 सात जन जो
सही सही जवाब दे सकते हैं आलसी उन
से अधिक बुद्धिमान अपने आपको समझता
है। 17 जो रास्ते में चलते-चलते पराए झगड़े
में अपने हाथ डालता है, वह इन्सान की तरह
है जो कुत्ते को कान से पकड़ता है। 18 जिस
तरह से एक पागल, जलती लकड़ियाँ या
हानिकारक तीर फेंकता है, 19 वैसा ही वह
मनुष्य है जो किसी को धोखा देकर कहता
है, “मैं तो मज़ाक कर रहा था” 20 जिस तरह
से लकड़ी न होने से आग बुझ जाती है, उसी
तरह से जहाँ कानाफूसी करने वाला नहीं है,
वहाँ झगड़ा खत्म हो जाता है। 21 जैसे अंगारों
पर कोयला और आग पर लकड़ी होती है,
वैसे ही झगड़ालू व्यक्ति झगड़ा शुरू करने
के लिए होता है। 22 कानाफूसी करने वाले
की बातें, मज़ेदार खाने की तरह अन्दर उतर
जाती हैं। 23 जिस तरह से चाँदी का पानी
चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्तन होता है, वैसा
ही बुरे मन वाले के मीठे शब्द होते हैं। 24 जो
दुश्मन अपनी बातचीत से अपने को भोला
दिखाता है, लेकिन अपने भीतर छल रखता
है, 25 उसकी मीठी-मीठी बातों पर भरोसा मत
कर लेना, क्योंकि उसके भीतर सात घिनौनी
चीजें रहती हैं 26 चाहे उसकी दुश्मनी छल की
वजह से छिप भी जाए, तौभी उसकी बुराई
सभा के सामने दिख जाएगी 27 जो गड्ढा
खोदता है वह खुद उसमें गिर जाएगा, और
लुढ़काया हुआ पत्थर, वापस उसी पर आ
गिरेगा 28 जिस ने किसी को झूठी बातों से
घायल किया हो वह उस से दुश्मनी रखता है
और चिकनी चुपड़ी बातें बोलने वाला बर्बादी
का कारण होता है।

27 कल के दिन के बारे में शेखी मत
मारो क्योंकि तुम नहीं जानते कि
दिन भर में क्या होगा। 2 तुम्हारी बड़ाई
दूसरे करें तो करें, तुम अपने मुँह से अपनी
बड़ाई मत करना। 3 पत्थर भारी होता है और
बालू वज़नदार। लेकिन बेवकूफ़ का गुस्सा
भड़कना इन दोनों से ज़्यादा भारी होता है।
4 कोप निर्दयी और गुस्सा तूफ़ान की तरह
होता है लेकिन ईर्ष्या के सामने कौन खड़ा
रह सकेगा? 5 खुले आम दी जाने वाली डाँट
छिपे हुए प्रेम से बढ़ कर है। 6 दोस्त से
मिले ज़ख्म फ़ायदेमंद होते हैं लेकिन दुश्मन
ज़्यादा प्यार दिखाता है। 7 तृप्त व्यक्ति शहद
के छत्ते को भी ठुकरा देता है, लेकिन भूखे को
कड़वी चीज भी मीठी लगती है। 8 अपना घर
छोड़कर इधर-उधर भटकने वाला इन्सान
उस चिड़िया की तरह है जो अपना घोंसला
छोड़कर यहाँ वहाँ उड़ती फिरती है। 9 जैसे
तेल और खुशबू मन को खुश कर देते हैं,
वैसे ही दोस्त की सलाह मन को खुश कर
देती है। 10 जो तुम्हारे और तुम्हारे पिताजी
के भी दोस्त हों, उन्हें न छोड़ना और अपनी
मुसीबत के समय अपने भाई के घर मत
जाना। प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने
वाले भाई से कहीं बढ़ कर है। 11 हे मेरे
बेटे, बुद्धिमान होकर मेरा मन खुश करो, तब
मैं अपनी बदनामी करने वालों को उत्तर दे
सकूँगा। 12 अक्लमन्द मनुष्य मुसीबत को
आता देख कर छिप जाता है, लेकिन भोले
लोग आगे बढ़े चले जाते हैं और नुकसान

[a] **26.15** सुस्त

उठाते हैं। 13 जो पराए का ज़िम्मेंदार हो उस
का कपड़ा और जो अनजान का ज़िम्मेंदार
हो उस से गिरवीं की वस्तु ले लो। 14 जो
भोर को उठ कर अपने पड़ोसी को ऊँची
आवाज़ से आशीर्वाद दे, उसके लिए यह शाप
समझा जाता है। 15 झड़ी के दिन पानी का
लगातार टपकते रहना और झगड़ालू औरत
दोनों एक से हैं। 16 ऐसी औरत की शिकायतों
को रोकना, हवा को रोकने और तेल से
सने हाथों से किसी चीज को पकड़ना है।
17 जिस तरह से लोहा, लोहे को चमकाता
है, वैसे ही इन्सान का चेहरा अपने दोस्त
के साथ समय बिताने से चमकने लगता है[a]
18 जो अंजीर के पेड़ की देख-भाल करता
है, वह उस का फल खाता है। इसी तरह
से जो अपने मालिक की सेवा करता है उसे
प्रतिफल मिलता है। 19 जैसे पानी चेहरे को
वैसे मनुष्य का हृदय[b] मनुष्य की असलियत
बताता है। 20 जिस तरह से अधोलोक और
विनाशलोक वैसे ही इन्सान की आँखें कभी
सन्तुष्ट नहीं होतीं। 21 जिस प्रकार चाँदी के
लिए कुठाली और सोने के लिए भट्टी है मनुष्य
को बड़ाई से परखा जाता है। 22 चाहे तुम
बेवकूफ़ को अनाज के साथ ओखली में
मूसल से कूटो, फिर भी उसकी बेवकूफ़ी
उस में से नहीं निकलेगी। 23 अपनी भेड़
बकरियों की हालत अच्छी तरह जानों और
अपने जानवरों की देख-भाल ठीक से करना।
24 धन-दौलत सदा तक नहीं ठहरते हैं और
न राजमुकुट पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता
है। 25 घास कटने के बाद नयी उग आती है
और पहाड़ों से चारा इकट्ठा कर लिया जाता
है। 26 तब मेमने तुम्हारे वस्त्र के लिए और
बकरे खेत की कीमत चुकाने के लिए होंगे।
27 तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के खाने के
लिए बकरियों का दूध बहुतायत से होगा
और तुम्हारी नौकरानियों का जीवन-यापन भी
होता रहेगा।

28 किसी के पीछा न करने पर भी बुरे
लोग डरते रहते हैं, लेकिन धर्मी[c]
वाले जवान शेरों की तरह हिम्मत रखते हैं।
2 देश में अपराध होने के कारण नेता[d] बदलते
रहते हैं, लेकिन समझदार और ज्ञानी मनुष्य
के द्वारा स्थिरता बनी रहती है। 3 जो गरीब,
गरीबों पर अंधेर करता है, वह ऐसी भारी
बरसात की तरह है जो खाने की चीजों को
बर्बाद कर डालती है। 4 जो लोग नैतिक
मूल्यों को छोड़ देते हैं वे दुष्ट की बड़ाई
करते हैं, लेकिन जो नैतिक मूल्यों को मानते
हैं, वे उनकी खिलाफ़त करते हैं। 5 बुरे लोग
न्याय को नहीं समझते, लेकिन जो प्रभु से
प्रेम रखते[e] हैं वे सब कुछ समझते हैं। 6 खरी
चालचलन वाला गरीब व्यक्ति, टेढ़ी चाल
चलने वाले अमीर से बढ़ कर है। 7 जो नैतिक
मूल्यों का पालन करता है वह समझदार पुत्र
होता है और जो खाने उड़ाने वालों का साथी
होता है, वह अपने पिताजी के लिए शर्म का
कारण ठहरता है। 8 जो सूदखोरी से अमीर हो
जाता है वह उसके लिए इकट्ठा करता है, जो
कंगालों पर कृपा करता है। 9 जो अपना कान
व्यवस्था[f] से मोड़ लेता है, उसकी प्रार्थना
घिनौनी ठहरती है। 10 जो सीधे लोगों को
गुमराह करके बुरे रास्ते पर ले जाता है,
वह अपने खोदे हुए गड्ढे में खुद ही गिरता
है, लेकिन खरे लोग कल्याण के हिस्सेदार
बनते हैं। 11 अमीर इन्सान अपनी निगाह में
अक्लमन्द बनता है, लेकिन समझदार गरीब

[a] **27.17** वैसे ही मनुष्य, मनुष्य को सुधारता है। [b] **27.19** मन [c] **28.1** खरे जीवन [d] **28.2** शासक [e] **28.5** उन्हें चाहने वाले [f] **28.9** नैतिक सीख

उसे परख लेता है। 12 जब धर्मी[a] लोग जीत
हासिल करते हैं, तब बड़ी खुशी होती है,
लेकिन जब बेईमान ऊँचा पद पाते हैं, तब
लोग निराश हो जाते हैं। 13 जो अपना अपराध
छिपा रखता है, उस का काम सफल नहीं
होता लेकिन जो उन्हें मान कर छोड़ देता है,
उस पर दया की जाएगी। 14 जो व्यक्ति प्रभु
के डर में बराबर बना रहता है, वह धन्य है।
15 गरीब जनता पर हुकूमत करने वाला दुष्ट
गरजने वाले शेर और घूमने वाले भालू की
तरह है। 16 जो प्रधान[b] कमज़ोर दिमाग का
होता वही बहुत अंधेर करता है, और जो
लालच का दुश्मन होता है वह लम्बी उम्र
पाता है। 17 जो किसी इन्सान के खून का
गुनाहगार हो, वह भाग कर गड्ढे में गिरेगा,
कोई उसे रोकेगा नहीं। 18 जो सिधाई से जीता
है, वह बचाया जाता है, लेकिन जिस का
चालचलन टेढ़ा-मेंढ़ा है वह अचानक गिर
जाता है। 19 जो अपनी ज़मीन को जोतता
और बोता है, उसकी ज़रूरतें पूरी होती हैं।
लेकिन जो फ़ालतू लोगों का साथ करता
हैं, वह गरीबी से घिरा रहता है। 20 सच्चे
इन्सान पर बहुत आशीर्वाद होते हैं, लेकिन
जो अमीर बनने में जल्दबाजी करता है, वह
सज़ा ज़रूर पाएगा। 21 पक्षपात करना ठीक
नहीं है और यह भी कि कोई एक टुकड़े
के लिए अपराध करे। 22 लालची जन दौलत
इकट्ठा करने में उतावली करता है और यह
नहीं जानता कि वह कमी में पड़ेगा। 23 जो
किसी को डाँटता है वह आखिर में चापलूसी
करने वाले से ज़्यादा प्यारा हो जाता है। 24 जो
अपने पिताजी या माताजी को लूटकर कहता
है कि इसमें कुछ अपराध[c] नहीं, वह बर्बाद
करने वाले का साथी ठहरता है। 25 लालची
झगड़ा खड़ा करता है, लेकिन जो प्रभु पर
भरोसा रखता है वह सेहतमंद हो जाता है।
26 जो खुद पर भरोसा रखता है वह बेवकूफ़
है और जो समझदारी से कदम उठाता है, वह
बचता है। 27 जो गरीब को दान देता है, उसे
कमी नहीं होती है, लेकिन जो उस से दृष्टि
फेर लेता है, उस पर सज़ा आती है। 28 जब
दुष्ट हावी होते हैं तो लोग छिप जाते हैं लेकिन
जब वे नाश होते हैं तो धर्मी[d] उन्नति करते हैं।

29 जो बार-बार डाँटे जाने पर भी ज़िद्
करता है, वह अचानक बर्बाद हो
जाएगा और उस का कोई भी तरीका काम में
नहीं आएगा। 2 जब धर्मी लोग ऊँचा पद पाते
हैं, तो लोग खुश होते हैं। लेकिन जब एक
बुरा व्यक्ति राज्य करता है तो लोग हाय-हाय
करते हैं। 3 जो आदमी बुद्धि से प्रेम करता है,
वह अपने पिता को खुश करता है लेकिन
जो वेश्या का साथ करता है, वह धन दौलत
उड़ा डालता है। 4 राजा के इन्साफ़ के द्वारा
देश मज़बूत होता है लेकिन जो बहुत घूस
लेता है वह देश को नाश कर डालता है। 5 जो
पुरुष किसी से चिकनी चुपड़ी बातें करता है
वह उसके पैरों के लिए जाल बिछाता है।
6 बुरे[e] व्यक्ति का अपराध फ़न्दा बन जाता
है, लेकिन धर्मी खुश होकर जय-जयकार
करता है। 7 धर्मी व्यक्ति गरीबों के हक की
चिन्ता करता है, लेकिन दुष्ट उसे जानने की
समझ नहीं रखता। 8 ठट्ठा करने वाले लोग
नगर में आग लगा देते हैं, लेकिन अक्लमन्द
लोग गुस्से को ठण्डा कर देते हैं। 9 जब
किसी बुद्धिमान की मूर्ख से बहस होती है,
तो मूर्ख इन्सान गुस्सा हो उठता है और वहाँ
शान्ति नहीं रहती। 10 खूनी लोग खरे व्यक्ति
से दुश्मनी रखते हैं और सीधे लोगों की
जान की खोज करते हैं। 11 मूर्ख अपने मन

[a] **28.12** ईमानदार [b] **28.16** शासक [c] **28.24** बुरा [d] **28.28** भले लोग [e] **29.6** खराब

की सारी बातें बता देता है, लेकिन बुद्धिमान
अपने मन को काबू करके शान्त करता है।
12 जब प्रबन्धक झूठी बात सुनता है, तब
उसके नौकर बुरे हो जाते हैं। 13 गरीब और
अंधेर करने वाला, दोनों ही समान हैं, प्रभु[a]
दोनों की आँखों में रोशनी देते हैं। 14 जो राजा[b]
निर्धनों के साथ न्याय का व्यवहार करता है,
उसकी गद्दी सदा तक बनी रहती है। 15 छड़ी
और डाँट से बुद्धि मिलती है लेकिन जो बच्चा
यों ही छोड़ दिया जाता है वह माँ जी की
शर्म का कारण ठहरता है। 16 दुष्टों के बढ़ने
से अपराध बढ़ता है लेकिन आखिर में खरे
लोग उनकी बर्बादी को देखेंगे। 17 अपने बेटे
का अनुशासन करो और उस से तुम्हें सुख
मिलेगा। वह तुम्हारे प्राण को भी आनन्दित
करेगा। 18 दर्शन[c] न होने की वजह से लोग
बे-लगाम हो जाते हैं, लेकिन जो अनुशासन
में रहता है[d], वह धन्य होता है। 19 कर्मचारी[e]
सिर्फ बातों ही से नहीं सुधरता, क्योंकि वह
समझ कर भी नहीं मानता है। 20 क्या तुम
बातें करने में जल्दबाजी करने वाले इन्सान
को देखते हो उस से ज़्यादा तो बेवकूफ़ ही
से आशा है। 21 जो अपने दास[f] को उसके
लड़कपन से ही लाड़ प्यार से पालता है, वह
अन्त में उस का बेटा बन जाता है। 22 गुस्सा
करने वाला व्यक्ति झगड़ा करता है, और
बहुत गुस्सा करने वाला अपराधी भी होता
है। 23 मनुष्य को घमण्ड की वजह से नीचा
देखना पड़ता है, लेकिन नम्र मन वाला महिमा
पाता है। 24 जो चोर का साथी होता है वह
अपना दुश्मन बन जाता है, शपथ खाने पर
भी वह अपना मुँह नहीं खोलता। 25 मनुष्य
का डर तो एक फन्दे की तरह है लेकिन
जो प्रभु पर भरोसा रखता है, वही ऊँचा
किया जाएगा। 26 अधिकारियों से बहुत लोग
मिलना चाहते है, लेकिन प्रभु ही इन्सान का
सच्चा इन्साफ़ करते हैं। 27 धर्मी लोग अन्यायी
से, और दुष्ट लोग खरा जीवन जीने वालों से
घृणा करते हैं।

30 याके के बेटे आगूर के ज़ोरदार
शब्द। यह पुरुष इतीएल और
उक्काल से यह कहता है। 2 निश्चिय मैं हर
एक मनुष्य से ज़्यादा बेअक्ल[g] हूँ और मुझ
में मनुष्य की समझ नहीं है। 3 न ही मैंने बुद्धि
प्राप्त की है और न परम पवित्र का ज्ञान मुझे
मिला है। 4 स्वर्ग पर चढ़ने के बाद वापस
उतर कर कौन आया? हवा को अपनी मुट्ठी
में कौन बन्द रख सका? समुद्र को किस ने
अपने कपड़ों में समेंट कर रखा है? किस
ने पृथ्वी की सीमाओं को ठहराया है? उस
का नाम क्या है? उसके बेटे का नाम क्या
है? यदि तुम जानते हो तो बताओ। 5 प्रभु का
एक-एक शब्द खरा है जो प्रभु की शरण लेते
हैं उनके लिए वह ढाल हैं। 6 तुम उनकी कही
बातों में कुछ भी जोड़ना नहीं, कहीं ऐसा न हो
कि वह तुम्हें डाँटे और झूठा ठहराएँ। 7 मैंने
आप से दो बातों की माँग की है - मेरे मरने से
पहले मुझे देने से इन्कार न कीजिएगा। 8 मेरी
मदद करें कि मैं झूठ न बोलूँ, न ही मुझे बहुत
दौलत दें और न ही कंगाल बनाएँ। मेरी हर
दिन की ज़रूरत पूरी कर दें। 9 कहीं ऐसा न हो
कि तृप्त होकर आपका इन्कार करके कहूँ,
“प्रभु कौन हैं?” या मैं कमी में पड़कर चोरी
करूँ और अपने प्रभु के नाम को कलंकित
करूँ। 10 किसी दास[h] की उसके मालिक से
चुगली न करना, ऐसा न हो कि वह तुम्हें शाप
दे और तुम दोषी ठहरो 11 ऐसे लोग हैं जो

[a] **29.13** प्रभु [b] **29.14** शासक [c] **29.18** ईश्वरीय ज्ञान [d] **29.18** या व्यवस्था को मानता है [e] **29.19** नौकर, दास [f] **29.21** नौकर [g] **30.2** पशु समान [h] **30.10** नौकर

अपने पिताजी को बुरा कहते हैं और माताजी
को धन्य नहीं कहते 12 ऐसे लोग भी है जो
अपनी दृष्टि में निष्कलंक हैं फिर भी अपनी
गदंगी से मुक्त नहीं हुए है। 13 कुछ लोगों की
आँखें घमण्ड से भरी रहती हैं, उनकी भौंहें
घमण्ड से चढ़ी रहती हैं। 14 ऐसे लोग भी होते
हैं जिन के दाँत तलवार और दाढ़ें छूरियों की
तरह हैं, ताकि सताए हुओं को और कंगालों
को खत्म कर डालें। 15 जैसे जोंक की बेटियाँ
हमेशा मांगती रहती है, तीन चीजें कभी तृप्त
नहीं होती, वरन् चार हैं जो कभी 'बस' नहीं
कहतीं। 16 अधोलोक और बांझ की कोख,
ज़मीन जो पानी पी पीकर तृप्त नहीं होती और
आग जो कभी बस नहीं कहती। 17 जो आँख
अपने पिताजी का ठट्ठा करती है और माताजी
को तुच्छ जानती है, उसे घाटी के कौए
निकाल देंगे और गिद्ध[a] के बच्चे खा जाएँगे।
18 मेरे लिए तीन बातें बहुत मुश्किल हैं, वरन्
चार हैं जो मेरी समझ से बाहर हैं। 19 आकाश
में चील की उड़ान चट्टान पर साँप का रेंगना,
बीच समुन्दर में जहाज़ का चलना और युवती
के साथ युवक की चाल 20 व्यभिचारिणी का
रवैया भी वैसा है, वह अवैध यौन सम्बन्ध
करने के बाद अपनी गलती मानती नहीं।
21 तीन ऐसी बातें है जिन से धरती काँपती
है, वरन् चार हैं जिन्हें वह सह नहीं सकती।
22 दास[b] का राजा बन जाना और मूर्ख का
पेट भरना। 23 घिनौनी औरत का ब्याहा जाना
और दासी का अपनी मालकिन की जगह
ले लेना। 24 पृथ्वी पर ऐसे प्राणी हैं, जो छोटे
तो हैं लेकिन बहुत अक्लमन्द हैं। 25 चीटियाँ
कमज़ोर तो हैं, लेकिन वे बहुत अक्लमन्द
हैं, वे गर्मी के दिनों में अपना खाना बटोरती
हैं 26 बिच्जू ताकतवर प्राणी नहीं हैं फिर भी
वे अपना घर चट्टानों पर बनाते हैं। 27 टिड्डियों
का कोई नेता नहीं होता है फिर भी वे दल
बांध कर चलती हैं। 28 छिपकली को हाथ से
पकड़ा जा सकता है, तौभी वह राजमहल में
रहती है। 29 तीन ऐसे प्राणी हैं, जिन की चाल
सुन्दर है। 30 शेर सभी जानवरों में ताकतवर
है और निडरता से सब का मुकाबला करता
है। 31 अकड़ कर चलने वाला मुर्गा, बकरा
और वह राजा जो अपनी सेना के साथ हो।
32 अगर तुम अपने आपको बड़ा समझ कर
मूर्ख ठहरे हो या तुमने कोई बुरी योजना
बनायी हो तो अपना मुँह पर हाथ रखो।
33 जिस तरह दूध को मथने से मक्खन और
नाक को मरोड़ने से खून निकलता है, वैसे ही
गुस्से को भड़काने से झगड़ा पैदा होता है।

31 लमूएल राजा की बातें अर्थात
ईश्वरीय ज्ञान जो उसकी माताजी ने
उसे सिखाया। 2 हे मेरे बेटे, हे मेरे अपने बेटे
मेरी प्रतिज्ञा के बेटे मैं तुम से क्या कहूँ?
3 स्त्रियों को अपनी ताकत मत देना; न अपना
जीवन उनके वश में करना, जो राजाओं को
बर्बाद कर डालती हैं 4 हे लमूएल, राजाओं
को दाखमधु[c] पीना शोभा नहीं देता और
मदिरा चाहना रईसों को नहीं फबता; 5 ताकि
वे नशे में आकर अपनी ज़िम्मेंदारियों को
भूल जाएँ या किसी दुखी के हक को मारें।
6 दाखमधु[d] उसे पिलाओ जो मरने पर है,
या उदास है। 7 जिस से वह पीकर अपनी
गरीबी को भूल जाए और अपनी कड़ी मेहनत
को फिर याद न करे। 8 गूँगे के लिए अपना
मुँह खोलो और सब अनाथों का न्याय सही
रीति से करो 9 अपना मुँह खोलो और सच्चाई
से न्याय करो। ज़रूरत में पड़े हुए तथा
सताए हुए लोगों के अधिकार की रक्षा
करो। 10 अच्छी पत्नी किसे मिल सकती है?

[a] **30.17** उकाब [b] **30.22** गुलाम [c] **31.4** शराब [d] **31.6** शराब

उसकी कीमत तो मूगों से भी बढ़ कर है
उसके पति के मन में उसके लिए विश्वास है।
11 उसे लाभ की कमी नहीं होगी 12 वह पूरे
जीवन भर उस से बुरा नहीं, अच्छा बर्ताव
करती है। 13 वह ऊन और सन ढूँढकर खुशी
के साथ अपने हाथों से काम करती है। 14 वह
व्यापार के जहाज़ों की तरह अपनी खाने
की चीजें दूर से मँगवाती है। 15 वह भोर
को अन्धेरे में ही उठ जाती है और परिवार
के लिए खाने का प्रबन्ध करती है। वह
अपनी दासियों को अलग अलग काम देती
है। 16 वह किसी खेत के बारे में विचार कर
उसे खरीद लेती है। अपने हाथ की कमाई
से वह अंगूर का बगीचा लगाती है। 17 वह
अपनी कमर को कसती है और अपनी बाँहों
को मज़बूत करती है। 18 वह ख्याल रखती है
कि उस का व्यापार मुनाफ़ा देता है या नहीं।
देर रात उसकी बत्ती जलती रहती है। 19 वह
चकली पर अपना हाथ बढ़ाती है। उसके
हाथ चरखे को थामें रहते हैं। 20 वह गरीबों
के लिए अपनी मुट्ठी खोलती है और अपनी
मदद का हाथ बढ़ाती है। 21 सर्दी के समय
उसे अपने परिवार की चिन्ता नहीं होती है,
क्योंकि उसके घर के सभी लोगों के पास
समुचित गरम कपड़े होते हैं। 22 वह खुद
चादरें बुनती है, उसके कपड़े महीन मलमल
के और बैजनी रंग के होते हैं। 23 नगर के
प्रवेश द्वार की सभा में जब उस का पति देश[a]
के सम्मानीय लोगों के साथ बैठता है, तो
इज़्ज़त पाता है। 24 वह कीमती वस्त्र बना
कर बेचती है, और व्यापारियों तक कमर
बन्द पहुँचाती है। 25 शक्ति और सम्मान ही
उसके वस्त्र हैं, वह आने वाले दिनों पर
हँसती है। 26 वह अक्लमन्दी से ही अपना मुँह
खोलती है, उसकी जीभ पर कोमल शिक्षा
होती है। 27 वह अपने परिवार के चाल-चलन
पर ध्यान रखती है और बिना मेहनत किए
खाना नहीं खाती है 28 उसके बच्चे उसके प्रति
कृतज्ञ हैं उस का पति भी उस से खुश रहता
है। 29 तमाम ऐसी महिलाएँ हुयी हैं जिन्होंने
भले काम किए हैं, लेकिन तुम उन सब से
बड़े[b] हो 30 आकर्षण तो झूठा और सुन्दरता
बेकार है, लेकिन जो महिला प्रभु से डरती है
उसी की बड़ाई होगी। 31 उसकी मेहनत का
फल उसे दिया जाए और नगर द्वारों में उसके
कामों से उसकी बड़ाई हो।

[a] **31.23** समाज [b] **31.29** अलग

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com